शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष -२ अंक - ९ माह - मार्च २०२०

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढायें।

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-६

माह- मार्च २०२०

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

किसी इमारत को मजबूत बनाना हो तो उसकी नींव को सर्वाधिक पुख्ता बनाना पड़ता है। परिषदीय शिक्षकों को भी ऐसा शिल्पकार होना चाहिए जोकि विद्यार्थी की नींव मजबूत करें। यदि कोई विद्यार्थी आरम्भिक स्कूली वर्षों में अच्छी शिक्षा ग्रहण करता है तो उसके लिए आगे की अच्छी पढ़ाई के रास्ते स्वयंमेव खुल जाते हैं। ऐसे में परिषदीय शिक्षकों की भूमिका बढ़ जाती है क्योंकि बच्चा सर्वप्रथम यहीं शिक्षा प्राप्त करता है। उसके बाद उसके लिए माध्यमिक और फिर उच्च शिक्षा के मार्ग खुलते हैं। ऐसे में परमावश्यक है कि विद्यार्थी की नींव मजबूत हो।

मिशन शिक्षण संवाद इसी नींव को मजबूत बनाने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। जहाँ एक ओर शिक्षकों के नवाचारों, गतिविधियों व अन्य प्रयासों के एक दूसरे के साथ साझा करने व लाभ प्राप्ति,प्रचार–प्रसार हेतु एक अच्छा मंच तैयार हो गया है। वहीं कई ऐसे शिक्षकों को झकझोरने का कार्य भी कर रहा है जिनमें क्षमताएँ तो अपार हैं लेकिन वे अपना 100% बच्चों को नहीं दे रहे हैं।

दैनिक श्यामपट्ट, प्रतियोगिता प्रभात आदि शिक्षण के ऐसे स्तम्भ बनकर निकले हैं जिससे बच्चों को प्रतिदिन नवीन जानकारियाँ मिल रही हैं। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी हो रही है। यह प्रसन्नता का विषय है कि विगत सत्र में मिशन शिक्षण संवाद ने न सिर्फ इसकी उपयोगिता को चरितार्थ किया है , एक दूसरे के अनुभवों का लाभ उठाते हुए छात्र छात्राओं तक पहुंचाने में भी सफलता प्राप्त की है।

इसी क्रम में मिशन शिक्षण संवाद की ओर से प्रतिमाह एक पत्रिका का ऑनलाइन प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका में शिक्षकोपयोगी स्तम्भों के साथ – साथ बाल कोना जैसे स्तम्भ भी हैं जोकि इसे बच्चों के बीच भी लोकप्रिय बनाते हैं। न केवल परिषदीय विद्यालयों के बच्चों अपितु सबके लिए यह पत्रिका उपयोगी है। मैं मिशन शिक्षण संवाद की पत्रिका के आगामी अंक हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

श्री हेमन्त राव
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
हरदोई

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

प्रकृति के विविधता भरे प्रेम रंग हमें संदेश देते हैं कि किस तरह अलग–अलग रंग–ढंग, रीति–रिवाज के बावजूद आपसी सहयोग, प्रेम और विश्वास से मानवता को मजबूत कर मनुष्य जाति के जीवन में सुख–शान्ति का उजाला, ठीक उसी तरह कर सकते हैं जैसे सूर्य के प्रकाश में समाहित विविध रंग आपस में मिलकर प्रकृति के अन्धकार को दूर करते हुए प्रकृति संरक्षण के रूप में प्रकृति को उजाले से भर देते हैं। लेकिन पता नहीं क्यों प्रकृति का सबसे विवेकशील प्राणी मनुष्य प्रकृति के संदेश को भूलकर अपने–अपने रंगों को ही सबसे महत्वपूर्ण समझकर उसके संरक्षण के लिए यहाँ तक आगे बढ़ जाता है कि जहाँ से अन्य रंगों को नष्ट करने की स्थिति बन जाती है जो मानवता के विनाश का ही कारण बनने लगता है। जबकि सभी जानते हैं कि प्रकृति के सप्त रंगों का संयोजन ही श्वेत प्रकाश का कारण है। आप सहज अंदाज लगा सकते हैं, यदि सूर्य का श्वेत प्रकाश इस प्रकृति को न मिले तो क्या होगा? यदि मानवता के लिए आवश्यक श्वेत प्रकाश मनुष्यों के जीवन में न मिला तो इस मानवता का क्या होगा? इसी प्रकृति एवं मानवता के संरक्षण को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा के उत्थान, शिक्षक के सम्मान एवं मानवता के कल्याण के पथ पर विविधताओं को आपसी सीखने–सिखाने एवं सहयोग के रूप में मिशन शिक्षण संवाद परिवार स्वैच्छिक स्वयंसेवी के रूप में आप सभी के साथ मिलकर सेवा कर रहा है। इसी क्रम में मिशन शिक्षण संवाद परिवार आप सभी के लिए प्रतिमाह आपसी सीखने–सिखाने के लिए शिक्षण संवाद नाम से मासिक पत्रिका प्रकाशित करता है। जो विविध ज्ञान के रंगों का संकलन एवं समन्वय कर शिक्षा के उत्थान एवं मानवता के कल्याण के लिए वर्तमान अंक प्रस्तुत है। आशा है आप सभी सहयोगी इसका लाभ लेकर मानवता को मजबूर करने के लिए शिक्षण संवाद का अध्ययन कर, हम सभी का मार्गदर्शन करेंगे।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
पाठकों के पत्र	1
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	2
मिशन गीत	4
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	5–6
अनमोल बाल रत्न	7
निन्दक नियरे राखिए	8–9
महिला दिवस विशेष	10
महिला सशक्तिकरण	11–12
महिला दिवस विशेष	13–15
टी.एल.एम.संसार	16–17
नवाचार	18–21
इंग्लिश मीडियम डायरी	22
माह की गतिविधि	23
बाल कविता	24
प्रेरक–प्रसंग	25–28
बाल कविता	29
बाल कहानी	30–31
बाल फिल्म	32
बाल कविता	33
साहस और कर्तव्यनिष्ठा की कहानी	34–35
सदविचार	36–37
शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला	38–40
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	41
योग विशेष	42–43
खेल विशेष	44–45

डाक खाना

पाठकों के पत्र

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की ऑनलाइन पत्रिका शिक्षण संवाद के फरवरी 2020 के अंक को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगातार बिना किसी पद, प्रतिष्ठा, लोभ, लालच के इतनी बेहतरीन और ज्ञानवर्धक पत्रिका का प्रकाशन कर मिशन शिक्षण संवाद ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। बेसिक शिक्षा के उत्थान और शिक्षकों के सम्मान के लिए दृढ़संकल्पित मिशन शिक्षण संवाद के कार्यों और शिक्षकों के नवाचारों की भूरि–भूरि प्रशंसा चहुँओर हो रही है।

बी.एस.ए. सर फीरोजाबाद का शुभकामना संदेश, आदरणीय विमल सर का सम्पादकीय, अवनीन्द्र सर और प्रशान्त जी की विचारशक्ति वास्तविकता का बोध कराती हैं।

बहन प्रतिभा चौहान का मिशन गीत, बहन प्रज्ञा सिंह की कविता–पुलवामा के शहीदों को नमन बहुत अच्छी लगीं। शिक्षण संवाद पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

ओमकार पाण्डेय,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय किरतापुर,
विकास खण्ड – सकरन,
जनपद–सीतापुर।

दीक्षा एप का प्रयोग कर शिक्षक बढ़ाएँ अपनी दक्षता

–डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक / संपादक

वर्तमान तकनीकी युग में जब प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से व्यक्ति के कार्य करने की दक्षता और दक्षता बढ़ी है। कम समय व मेहनत के अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। ऐसे में शिक्षा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र मे तकनीक और विशेषकर सूचना एवं संचार तकनीक के प्रयोग का काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। कुछ ऐसा ही शिक्षकों के सीखने–सिखाने के नए प्लेटफॉर्म के रूप में सरकार के दीक्षा एप ने शिक्षकों के बीच अपनी जगह बनाई है। जिसका प्रयोग कर वर्तमान में लाखों शिक्षक अपनी कक्षाओं को जीवन्त बना रहे हैं। **DIKSHA** मानव संसाधन विकास मंत्रालय (**MHRD**) द्वारा समर्थित एक लर्निंग एप है जो राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (**NCTE**) द्वारा संचालित है। यह एक ऐसा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जो शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों को निर्धारित स्कूल पाठ्यक्रम के लिए प्रासंगिक एवं जरूरी शिक्षण सामग्री प्रदान करता है। यह कक्षा के अनुभवों को सुखद एवं प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षकों को पाठ योजना, कार्यपत्रक और गतिविधियों जैसे सहायक उपकरण उपलब्ध कराता है। इसके माध्यम से हम अवधारणाओं को समझ सकते हैं, पाठों को संशोधित कर सकते हैं और अभ्यास कार्य भी कर सकते हैं। इसका प्रयोग कर अभिभावक कक्षा की गतिविधियों का पालन कर सकते हैं और स्कूल के बाद भी संदेह को दूर कर सकते हैं। दीक्षा राज्यों, शिक्षक शिक्षा संस्थानों और निजी संस्थाओं द्वारा उपयोग के लिए शिक्षक–केंद्रित पहलों के लिए एक अनुकूलन योग्य नेशनल डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर है। इसे शिक्षक हिंदी, अंग्रेजी सहित विभिन्न भाषाओं विषयों में सभी मानकों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन संसाधनों तक पहुँचने और उसे बनाने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

दीक्षा एप की खूबियाँ कुछ ऐसी हैं जो इसे शिक्षकों और छात्रों के लिए अधिक महत्वपूर्ण बनाती हैं जैसे व इससे शिक्षकों और सर्वश्रेष्ठ लेखकों

/विशेषज्ञों द्वारा बनाई गई इंटरैक्टिव सामग्री का अन्वेषण कर सकते हैं।
इसके प्रयोग से शिक्षक पाठ्यपुस्तकों से क्यूआर कोड स्कैन कर विषय व पाठ से जुड़ी अतिरिक्त शिक्षण सामग्री खोज सकते हैं। यह इंटरनेट कनेक्टिविटी के बिना भी ऑफलाइन सामग्री को साझा करने की सुविधा देता है। इसकी सहायता से घर बैठे स्कूल की कक्षा में जो पढ़ाया जाता है, उससे संबंधित पाठ और कार्यपत्रक खोज सकते हैं।
यह एप वीडियो, पीडीएफ, **HTML, ePub, mobi** जैसे कई ऑनलाइन सामग्री प्रारूपों का समर्थन करता है। यह एप शिक्षकों के साथ बच्चों, अभिभावकों के लिए भी बहुत लाभदायक है। यह कक्षा को रोचक बनाने के लिए इंटरैक्टिव और आकर्षक शिक्षण सामग्री खोजने में मदद करता है। छात्रों को कठिन अवधारणाओं को समझाने के लिए अन्य शिक्षकों के सर्वोत्तम अभ्यास देखने और साझा करने में सहायक है। यह शिक्षक को अपने व्यावसायिक विकास को बढ़ाने के लिए विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में शामिल होकर उसे पूरा करने और प्रमाण पत्र अर्जित करने में मददगार है। यह शिक्षक को पढ़ाए गए विषय के बारे में अपने छात्रों की समझ की जाँच करने और उसके डिजिटल मूल्यांकन की सुविधा के साथ ही उसे अपने शिक्षण के विशिष्ट वीडियो व शिक्षण सामग्री इस एप पर अपलोड करने की सुविधा प्रदान करता है।

वर्तमान में अपने उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद की सभी पाठ्यपुस्तकों से संबंधित पाठों एवं सम्बन्धित सामग्री के अपडेशन का काम बहुत तेजी से किया जा रहा है। वर्तमान शिक्षा महानिदेशक श्री विजय किरण आनन्द जी स्वयं इस कार्य में रुचि लेकर विभाग के अच्छे शिक्षको की टीम व विशेषज्ञों से इसके लिए सामग्री निर्माण कराने और उसे इस एप पर अपलोड कराने का कार्य कर रहे हैं। उम्मीद है अगले महीने से शुरू हो रहे नए शैक्षिक सत्र से यह एप और अधिक सशक्त व प्रभावशाली रूप में हम सबका मददगार बनेगा।

ऐसे करें डाउनलोड

दीक्षा एप को किसी भी स्मार्ट फोन, टेबलेट अथवा कम्प्यूटर में आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। मोबाइल में इसे डाउनलोड करने के लिए प्ले स्टोर में जाकर दीक्षा एप डाउनलोड करके कुछ आसान व्यक्तिगत सवालों के जैसे भाषा, शिक्षक या छात्र, राज्य के शैक्षिक बोर्ड आदि का नाम आदि की जानकारी देकर इसे प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती
9415047039
Email: sarvestkumar@gmail.com

मिशन गीत

बनो अचल तुम गिरि जैसे, तूफान ना कुछ कर सकता है।
विश्वास करो खुद पर राही, पद विचलित भ्रम ना कर सकता है।।
अँधेरा ना जग में घना है, नजर उठाकर चलो जरा।
ज्ञान पुँज की शरण में जाओ, शिक्षक सब कर सकता है।।

मंजिल तेरी दूर नहीं है, बस तू ही उससे दूर खड़ा।
हर पत्थर एक सीख है तेरी, राह रोककर जो है पड़ा।
सब कुछ तुझ तक तेरा ही है, जो भी तू कर सकता है।
ना छोटा ना बड़ा है कुछ भी, शिक्षक सब कर सकता है।।

सदृश्य पहेली है प्रकृति की, नजर नजर से दूर बड़ी।
अहम ये तेरी राह रोकता, नित जीवन की घटती घड़ी।
देख झरोखे से अपने, मन में जो रहता देव कहीं।
अम्बर कदम तले तेरे होगा, धरती मुट्ठी में छिपी कहीं।

नीर हो तुम निर्मल हो तुम, गिरि से गिरते सागर में।
मन तेरा चंचल तितली है, अथाह ज्ञान मन गागर में।
खुशबू बिखरे रेत तपिश की, भीनी भीनी मनमोहक।
प्रेम– दया से भरा हृदय, हर एक दुर्गुण का है शोषक।

विश्वास करो खुद ही खुद पर, तिमिर नहीं बढ़ सकता है।
राही सात समंदर बाधा, लाँघ कदम ही सकता है।
भँवर में जग के जब घिर जाए, आत्मसात कर सकता है।
राह कोई जब नजर ना आए, शिक्षक सब कर सकता है।

लक्ष्य ना जीवन का हो छोटा, तुम छोटे इंसान नहीं।
हर बाधा है छोटी राही, परम अंश है तुझमें कहीं।
अटल नहीं है जग में कुछ भी, हर विकट काम हो सकता है।
वरदान दिव्य है हर एक शिक्षक, शिक्षक सब कर सकता है।।

रचयिता
नवीन कुमार,
सहायक अध्यापक,
माडल विद्यालय कलाई,
विकास खण्ड–धनीपुर,
जनपद–अलीगढ़।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४०५ हेमंत कुमार चौकियाल
रा०उ०प्रा०वि० डांगी गुनाऊं, ब्लॉक– अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग, उत्तराखंड
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_39.html

४०६ सरिता रानी,
पूर्व मा०वि० मंगूपुरा, ब्लॉक– मुरादाबाद (ग्रामीण), जनपद– मुरादाबाद
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_130.html

४०७ अर्चना सिंह (प्रधानाध्यापक), प्राथमिक विद्यालय चाँदपुर, भिटौरा, फतेहपुर
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/01/blog-post_96.html

१०६ संयोगिता, प्राथमिक विद्यालय अदलपुर, डिलारी, मुरादाबाद
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/109.html

४०८ सोनिया रानी चौहान
पूर्व मा०वि०अब्दुल्लापुर लेदा ब्लॉक–ठाकुरद्वारा, जनपद– मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_93.html

४०६ प्रियंका (इंचार्ज प्रधानाध्यापिका) उच्च प्राथमिक विद्यालय गवाँ, रजपुरा, सम्भल
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_3.html

४१० अरुण कुमार निरंकारी पूर्व माध्यमिक विद्यालय कल्याणपुर वि.ख.– मांट, जिला– मथुरा वर्तमान में परिषदीय संविलित विद्यालय कल्याणपुर (मांट) मथुरा
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_30.html

४११ कुसुम लता गड़िया प्र०प्र०अ० राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय वीणा
ब्लॉक– पोखरी, जिला– चमोली, राज्य– उत्तराखंड
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_41.html

४१२ राजीव कुमार (प्र०अ०) प्रा०वि० बहादुरपुर राजपूत, ब्लॉक– कुन्दरकी, जनपद– मुरादाबाद राज्य– उत्तर प्रदेश https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_10.html

४१३ प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०) पू०मा०वि० वीरपुर छबीलगढी, जवां, अलीगढ़
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/02/blog-post_53.html

अनमोल बाल रत्न राज्यपाल द्वारा सम्मानित

माननीय राज्यपाल महोदया उत्तर प्रदेश श्रीमती आनंदी बेन पटेल द्वारा जनपद रामपुर का 17 फरवरी ओर 18 फरवरी को दो दिवसीय भ्रमण किया गया। माननीय राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्रीमती आनंदीबेन पटेल महोदया द्वारा जनपद रामपुर भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत पुलिस लाईन में स्वागत व अभिनंदन किया! माननीय राज्यपाल महोदया द्वारा "पढ़े रामपुर–बढ़े रामपुर" कार्यक्रम के अन्तर्गत बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। माननीय राज्यपाल महोदया द्वारा सैदनगर ब्लॉक के संविलियन विद्यालय हजरतपुर की कक्षा 05 की छात्रा कमलेश, पूर्व माध्यमिक विद्यालय सींगनी के कक्षा 08 के छात्र सुरजीत, संविलियन विद्यालय सींगन खेड़ा –1 के कक्षा 08 के छात्र जीत कुमार, कस्तूरबा गाँधी बालिका आवसीय विद्यालय नगर क्षेत्र की कक्षा 07 की छात्रा रोशनी और कस्तूरबा गांधी बालिका आवसीय विद्यालय चमरौआ की कक्षा 08 की छात्रा अदा जमाली द्वारा सम्मानित किया गया। माननीय राज्यपाल महोदया द्वारा ग्राम पंचायत मनकरा पहुँचकर खेल के मैदान का निरीक्षण किया। उनके द्वारा बच्चों द्वारा की गई प्रस्तुति की सराहना की तथा विभिन्न खेलों के महत्व के बारे में बताया कि खेल एवं व्यायाम स्वस्थ शरीर के लिए बेहद जरूरी है इससे अनेक प्रकार की बीमारियों से छुटकारा मिलता है। व्यायाम एवं खेल को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। माननीय राज्यपाल महोदया द्वारा पी०टी० में विशेष प्रदर्शन के लिए राज्य पुरस्कार प्राप्त पूर्व माध्यमिक विद्यालय हरियाल, ब्लॉक – चमरौआ की टीम को सम्मानित किया गया।

निंदक नियरे राखिए

नैतिक पतन का जिम्मेदार कौन?

शिक्षण संवाद

विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा मनुष्य में जीवन जीने का कौशल और नैतिक समझ पैदा करती है पर आजादी के 6 दशक में हर गाँव में प्राथमिक विद्यालय होने के बाबजूद युवाओं में नैतिक पतन बढ़ता ही जा रहा है। आजादी के समय या उससे पहले जिन गाँव में प्राथमिक स्कूल संचालित थे। वहाँ आज भी तीसरी पीढ़ी अपना नाम ना लिखकर उपरोक्त विशेषज्ञों की बात को गलत साबित कर रहे हैं। शहरों के नामी कान्वेंट में पढने वाले संभ्रांत और समृद्ध घरों के किशोर छात्र चौराहे से गुजरने वाली लड़कियों और महिलाओं को घूरते और फब्तियाँ कसते नजर आते हैं। डॉक्टर और इंजीनियर बने उच्च शिक्षा प्राप्त युवा आतंकवादी गतिविधियों में पकड़े जा रहे हैं और मेडिकल तथा इंजिनियर कॉलेज के छात्र व्यापम घोटाले जैसे आपराधिक कृत्यों में संलिप्त हैं। हर व्यक्ति इस भौतिकवादी युग में अधिक पैसे कमाने के लिए कुछ भी कर गुजरने को आतुर है।

इस समय देश हताशा और निराशा के दौर से गुजर रहा है। समाज का पढ़ा लिखा वर्ग आशंकित और डरा हुआ है। अराजकता, लूट खसोट, भ्रष्टाचार की घटनाओं ने लोगों का सिस्टम पर से भरोसा खत्म कर दिया है। डरे सहमे लोग केवल अपने दिन भर काटते नजर आते हैं। मोहल्ले और दुकानों पर पर शाम को इकट्ठा होने वाले लोग अब घरों में कैद हैं। महिलाओं और लड़कियों के साथ हो रही छेड़छाड़ की घटनाओं ने समाज में दहशत का माहौल पैदा कर दिया है आखिर समाज का इतना नैतिक पतन क्यों हो रहा है इस पर गंभीर चिंतन आवश्यक है।

इस समस्या को अच्छे से समझने के लिए हमें कुछ पीछे जाना होगा। आज से पचास साठ साल पहले देश की अधिकांश आबादी अपने संयुक्त परिवारों के साथ ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती थी और इस परिवार में घर के बुजुर्ग और बड़ों के दिशानिर्देशों, कठोर अनुशासन और संस्कारों के बंधन में किसी भी बच्चे का सम्पूर्ण नैतिक विकास घर की पाठशाला में ही हो जाता था। रही सही कसर विद्यालय में मुंशी जी का डंडा पूरी कर देता था। समय के साथ बदलते भौतिक परिवेश और जीवन प्रतिस्पर्धा में आर्थिक परेशानी के कारण संयुक्त परिवार बिखरकर एकल बन गए जिससे परिवार की संस्कार पाठशालाएँ बंद हो गयीं। नैतिक मूल्यों के पतन में समाज से अधिक भूमिका अभिभावक की है क्यूँकि इन्ही परिवारों से समाज का निर्माण होता है। बेहतर सुख–सुविधा की चाह में पति और पत्नी नौकरीपेशा और कामकाजी हो गए और बच्चे पालना घर, क्रेच और आया के सहारे पलने लगे। पैसे कमाने की दौड़ में लोग परिवार, रिश्तेदार, पड़ोसी, दोस्तों और यहाँ तक कि बच्चों तक के लिए समय नहीं निकाल पा रहे हैं।

पिछले दो दशक में भारतीय शिक्षा व्यवस्था और पाठ्यक्रम में आमूल चूल परिवर्तन हुए हैं। नैतिक शिक्षा विषय पाठ्यक्रम से लगभग बाहर हो चुका है। शारीरिक दंड और उत्पीड़न के खिलाफ सख्त कानून बन जाने से विद्यालयों में अनुशासन का डंडा अलमारी में बंद हो चुका है। शिक्षा अधिकार अधिनियम 2005 में बच्चों के नाम ना काटे जाने के प्रावधानों, परीक्षा में फेल न किये जाने के नियम का फायदा उठाकर बच्चे लगातार उद्दंड हो रहे हैं। निजी व्यवस्था में चलने बाले कुछ नामी कान्वेंट आज भी स्कूल में अनुशासन बनाये हुए हैं, पर सरकारी स्कूल जिनमें देश की अधिकांश

आबादी के बच्चे अध्यनरत हैं वहाँ अनुशासन लगभग खत्म ही है। चूँकि सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे के अभिभावक अपने दो जून की रोटी में व्यस्त रहते हैं। इसलिए इनके छात्रों को स्कूल और घर दोनों जगह नैतिक शिक्षा की पढाई से वंचित रहना पड़ता है।

शहरी क्षेत्र के अभिभावकों के बच्चों की वर्तमान हालत भी कुछ ज्यादा अच्छी नहीं है। अधिकांश परिवारों में माता–पिता दोनों के कामकाजी होने के कारण ये अपने बच्चों को ज्यादा समय नहीं दे पाते हैं और परिवार एकल होने से अन्य रिश्तों से भी दूर होते जा रहे हैं। बच्चों का अधिकांश समय केवल कार्टून नेटवर्क के सहारे ही व्यतीत हो रहा है। शहरी माहौल में असुरक्षा के भय और लोगों के रिजर्व व्यवहार के कारण बच्चों का पार्क और मोहल्ले में खेलना अब प्रचलन में नहीं रह गया है। माता–पिता भी बच्चों को समय ना दे पाने के अपराधबोध से ग्रसित होने का पश्चाताप बच्चों को जेब खर्च देकर पूरा करते हैं जिससे बच्चों का प्रारंभिक अवस्था में सम्पूर्ण सामाजिक विकास नहीं हो पाता है और बच्चे तुनकमिजाज और चिड़चिड़े होते जा रहे हैं।

ताज्जुब की बात ये भी है कि ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र के बच्चे व्यवहार में ज्यादा उद्दंड हो रहे हैं। इंडिया टुडे ग्रुप द्वारा लगभग 17 वर्ष पूर्व देहली में संभ्रांत और समृद्ध परिवार के क्लब, पब और डिस्को में जाने वाले किशोरों पर किये गए सर्वे में चौंकाने वाले तथ्य सामने आये थे। ज्यादातर किशोरों का कहना था कि माँ बाप क्या होते हैं, हमें क्या पता। हम जब सुबह जागते हैं तो वो ऑफिस जा चुके होते हैं और जब हम सोने वाले होते हैं तब वो वापिस आते हैं। अब हम दिन किसके साथ बिताएँ? इसलिए हम अपने जेबखर्च से अपने दोस्तों के साथ एन्जॉय करते हैं।

न्यायपालिका और विधायिका की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। कुछ संगठन अभिभावकों और छात्रों की माँग पर देश भर के अभिभावकों की राय जाने बिना तुरंत कानून बना देना वर्षों से बने सामाजिक ढाँचे को ध्वस्त करने जैसा है। छात्र संघों द्वारा राजनीति, कॉलेज में ड्रेस कोड पर प्रदर्शन, अनुशासन में न्यायपालिका का दखल, शारीरिक उत्पीड़न कानून की आड़ में छात्रों का अपने माता–पिता के प्रति बदलता रुख, शिक्षा के व्यवसायीकरण में पैसे से खरीदी जाती डिग्रियाँ, बच्चों के हाथ में महँगे मोबाइल और उनके द्वारा इन्टरनेट का अनुचित इस्तेमाल आदि सैकड़ों कारण हैं जो आज के किशोर और युवा सहित पूरे समाज के नैतिक पतन के लिए जिम्मेदार हैं।

इसलिए जरुरी है कि पैसे की भागदौड़ में समय बचाकर हम अपने परिवारों को जिन्दा बनाये रखें। रिश्तों को गर्मजोशी से जियें। मोहल्ले की चौपालों को पुनः जिन्दा करें। बच्चों को समय दें उन्हें दादा, दादी, चाचा, चाची, ताऊ, ताई आदि रिश्तों के साथ जीने का मौका दें। विद्यालय के प्रधानाचार्य को अनुशासन बनाने में सपोर्ट दें। समाज में सरकार द्वारा स्थापित संसाधनों के उपयोग में जिम्मेदार नागरिक का फर्ज अदा करें। हालाँकि आज के भौतिकवादी समय में ये कठिन है पर खुद की संतान को भविष्य का अच्छा नागरिक बनाने और अपना श्रेष्ठ उत्तराधिकारी बनाने के लिए शुरुआत आपको आज ही करनी होगी।

अवनीन्द्र सिंह जादौन (शिक्षक)
महामंत्री टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश
कोऑर्डिनेटर मिशन शिक्षण संवाद उत्तर प्रदेश
278 कृष्णापुरम इटावा,
मोबाइल : 9412320607

महिला दिवस विशेष

शिक्षण संवाद

मैं सीमा यादव नगर क्षेत्र मथुरा के पूर्व माध्यमिक विद्यालय क्रमोत्तर नगर क्षेत्र मथुरा में कार्यरत हूँ। महिला शिक्षिका के रूप में मैंने अपने छात्र–छात्राओं के किशोरावस्था मे होने के कारण संवादहीनता की समस्या को देखा... न केवल महत्वपूर्ण विषयों पर अपितु सामान्य विषयों पर ही वह एक दूसरे से चर्चा करने में संकोच करते हैं। बालक के अलग समूह और बालिकाओं के अलग समूह हो जाते हैं। कुछ विषयों पर यह समूह विभाजन उचित है लेकिन हमेशा ऐसी स्थिति रहे ऐसा रहना उचित नहीं। कक्षा शिक्षण के विषय को रुचिकर बनाने के साथ–साथ मेरे द्वारा..... **possible channel** और **learning with Quiz** जैसे कार्यक्रम शुरू किए गये।

इन नवाचार और कार्यक्रम के माध्यम से प्रक्रिया स्वरुप छात्र–छात्राओं के बीच संवाद की स्वस्थ प्रक्रिया निरन्तर होना शुरू हुई। सामान्य से... विशिष्ट विषयों और पाठ्यक्रम पर उनके बीच होने वाली चर्चा शैक्षिक वातावरण को परिपूर्ण कर देती है।

विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं से एक शिक्षिका जैसे सम्बन्धों के बीच व्यक्तिगत रूप से भी उनके विभिन्न कौशल विकास हेतु भी प्रयासरत रहती हूँ। मेरे इस कार्य मे अन्य लोग भी मुझे हमेशा सहयोग करते हैं। एक शिक्षिका के रूप में हमेशा मेरा प्रयास रहता है कि हम शिक्षा के सर्वांगीण लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

श्रीमती सीमा यादव,
सहायक अध्यापिका,
क्रमोत्तर जूनियर हाईस्कूल नगर क्षेत्र,
जनपद–मथुरा।

महिला सशक्तिकरण की सच्ची कहानी

शिक्षण संवाद

यह कहानी है शारदा की....जो अपने दस भाई बहनों में छठवें नंबर की थी। मेहनती, दृढ़–निश्चयी, पढ़ाई से विशेष लगाव लेकिन अभावों और कठिनाइयों भरा कठिन और साल 1960 का दशक जब लड़कियों की पढ़ाई को इतना आवश्यक नहीं समझा जाता था। किसान परिवार, रोजी–रोटी का साधन केवल थोड़े से कुछ खेत और उन्हीं से पूरे परिवार का जीवन यापन। लेकिन फिर भी खुशियाँ ढूँढ ही लेते हैं ये गाँव के बच्चे। तालाब के पानी में खेलकर, आम के पेड़ से अमिया तोड़कर खाने में ही जीवन की सारी खुशियाँ समाहित थीं और दिनचर्या इतनी कठिन कि बस।

शारदा की तीन बड़ी बहनें और माँ खेतों में काम करती थीं और कभी–कभी तो बैलों के अभाव में खुद हल में बैलों की जगह लगकर खेत जोतना पड़ता था और शारदा, उसे तो पूरे घर का काम करना पड़ता था जिसमें खाना बनाने से लेकर सबके नहाने के लिए कुँए से पानी भरना भी था। अपने छोटे भाई–बहन भी सँभालने पड़ते।

लेकिन इस कठिनाई के जीवन में भी शारदा पढ़ना चाहती थी। इसीलिए वो स्कूल जाने के लिए वक्त निकाल ही लेती। रोज सुबह 4 बजे उठकर अपनी छोटी बहन के साथ चक्की में आटा पीसना, फिर उसी आटे की पूरे परिवार के लिए रोटियाँ बनाना, कभी–कभी तो रोटियाँ बनाते–बनाते ही स्कूल का समय हो जाता और जब स्कूल की घंटी बजती तो स्कूल पास होने के कारण घर तक सुनाई देती, तब शारदा बिना खाना खाये, बस्ता उठाकर स्कूल चली जाती। फिर जब खाने की छुट्टी 12 बजे होती और शारदा घर आती तो रोटियाँ खत्म हो चुकी होती थीं। फिर जब तक वो रोटी बनाती तब तक फिर घंटी बज जाती और वो फिर वापस स्कूल को दौड़ जाती, जब 4 बजे वापस लौटती तब जाकर कहीं खाना खाने का मौका मिलता। धीरे–धीरे बड़ी बहनों की भी शादी हो गयी और वो ससुराल चली गयी। एक बड़े भाई की एयरफोर्स में नौकरी लग गयी और वो अपने परिवार को लेकर बाहर चला गया। अब तो शारदा ही सबसे बड़ी रह गयी भाई–बहनों में और बड़ी भी कितनी केवल आठवीं में ही तो पढ़ती थी जब उसकी शादी कर दी गयी। शारदा आठवीं में तो उसके पति दसवीं में।

वाह! क्या जोड़ी थी। लेकिन शादी के साथ ही उसकी पढ़ाई बंद करवा दी उसके पिता जी

ने। बस फिर क्या था शारदा ने भूख हड़ताल कर दी और 3–4 दिन खाना नहीं खाया, थक हारकर उसकी माँ ने पिताजी को मनाया शारदा को नौवीं कक्षा में एडमिशन दिलवाने के लिए। शारदा के तो जैसे पंख लग गए। लेकिन ये खुशी भी अधिक दिनों तक न रही दसवीं पास करते ही उसका गौना कर दिया गया और ससुराल भेज दिया गया।

बस फिर वो एक साल शारदा के जो उसकी ससुराल में बीते मानसिक और शारीरिक तौर पर अत्यन्त कष्टदायी थे, इसी बीच 17 साल की छोटी उम्र में शारदा के एक बिटिया हुई। लेकिन इतनी छोटी उम्र में जब शरीर कमजोर होता है कैसे एक नन्ही सी जान को अपने में सहेज पाता। आखिर वो बच्ची इस दुनिया में आने से पहले ही साथ छोड़ गयी। लेकिन वो शारदा थी, बहुत मजबूत व दृढ़ निश्चयी। अपने आप को सम्भाला।

आखिरकार उसका सब्र काम आया और उसके पति की नौकरी शहर में लग गयी और दोनों एक नयी दुनिया में ढेरों सपने लेकर शहर आ गए।

बस यहीं से हुआ शारदा के जीवन का नया आरम्भ। अपने पति के सहयोग और साथ के बल पर शारदा नें पहले 11वीं और फिर 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर एक शिक्षक बनने की दुनिया में कदम रखा व **BTC** किया। इन्हीं सबके बीच उसने दो नन्हीं बेटियों को जन्म दिया। बड़ी आभा छोटी पूजा। सबसे परे उसने परिवार को सदैव प्राथमिकता दी। दूसरे शहर में नौकरी लगने के कारण उसने नौकरी और परिवार में परिवार को चुना।

अपनी दोनों बेटियों के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर ही रही थी कि एक बार फिर उसके ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। जब बड़ी बेटी की असमय मृत्यु हो गयी। अब एक ही बेटी रह गयी उसकी गोद में। परंतु शारदा या उसके पति ने कभी नहीं सोचा कि एक बेटा होता और उसी बेटी को बेटे के समान रखा। एक ऐसा समय भी आया जब एक दुर्घटना में शारदा के ऊपर से पूरा का पूरा ट्रैक्टर गुजर गया और 4 महीने तक शारदा बिस्तर पर ही थी। लेकिन उन परिस्थितियों का सामना भी शारदा ने हिम्मत से किया।

एक शिक्षक के तौर पर शारदा ने सदैव अपने कर्तव्यों का पूर्णतया निर्वहन किया। एक माँ के रूप में अपनी बेटी को सदैव आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया और आखिरकार अपनी बेटी को भी अपनी तरह एक समर्पित शिक्षिका बनाया। आज शारदा अपने शिक्षक के पद से सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। लेकिन उनके इस पूरे सफर में उसके परिवार और पति का सम्पूर्ण योगदान है।

पूजा सचान
EMPS मसेनी
बढ़पुर,फर्रुखाबाद

महिला दिवस विशेष

शिक्षण संवाद

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:"
अर्थात् देवता भी वहीं रमते हैं जहाँ नारी शक्ति की पूजा, आदर, सम्मान किया जाता है।

मातृशक्ति के बारे में वैसे तो क्या लिखें क्योंकि उन्होंने ही हमें लिखा है......अगर मैं भारतीय इतिहास से बात करूँ तो हड़प्पा संस्कृति मातृसत्तात्मक्ता की पहचान थी......इसके आगे चलें तो सातवाहन वंश में राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी ने अपने नाम के आगे माता का नाम लगाया......इससे आगे चलें तो रजिया सुल्तान महिला शासिका के रूप में रही.......भक्ति काल की बात करें तो मीरा और आंडाल को कौन भूल सकता है.....यदि इसके भी आगे बात करूँ तो पद्मिनी की सुंदरता व सतीत्व का गवाह तो पूरा विश्व रहा है......और आधुनिक इतिहास में देखें तो मदर टेरेसा....इंदिरा गांधी.....सरोजिनी नायडू जैसी महान विभूतियो को भुलाये नहीं भुलाया जा सकता।

ऐसी सतीत्व और संस्कारों से ओतप्रोत होती है यह मातृशक्ति.....इनको कोटि – कोटि नमन करने को मन चाहता है। जैसा हम सब जानते हैं कि 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह महिलाओं के सम्मान में एक अप्रतिम दिन की तरह मनाया जाता है। वैसे तो महिलाएँ सम्मान के लिए किसी दिन की मोहताज नहीं हैं। लेकिन फिर भी एक विशेष दिन उन्हें सम्मानित महसूस करवाता है यह अपने आप में गौरवशाली बात है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:–

सर्वप्रथम अमेरिका में 28 फरवरी 1909 में महिला दिवस मनाया गया। वर्ष 1910 में जर्मनी की एक महिला नेता क्लारा जेटकिन ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। तत्पश्चात 17 देशो की 100 महिला लीडर्स ने इस सुझाव पर सहमति जताई, लेकिन उस समय इनका उद्देश्य केवल महिलाओं को मताधिकार दिलाना था ।

सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने वाले देशों में ऑस्ट्रिया, स्विट्जरलैंड, डेनमार्क व जर्मनी अग्रणी रहे हैं। वर्ष 1913 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की तिथि को बदलकर

8 मार्च कर दिया गया। तब से लेकर अभी तक महिला दिवस इसी दिन मनाया जा रहा है। लेकिन इस बीच इसे फरवरी माह के अंतिम रविवार को मनाने का प्रावधान भी किया गया था। लेकिन 1917 में रूस की कुछ महिलाओं ने इसका विरोध किया क्योंकि उनके यहाँ जूलियन केलेंडर मान्य था जबकि पूरे विश्व में ग्रेगोरियन केलेंडर। जिसके हिसाब से अंतिम रविवार 8 मार्च को पड़ा क्योंकि फरवरी तो 28 दिन की होती थी। इसलिए चौथा रविवार मार्च में गिना गया जो कि 8 मार्च को था। तब से इसे 8 मार्च में ही मनाया जाता है जिसे रूस ने भी स्वीकृति दे दी। वर्ष 1975 को पहली बार यूनाइटेड नेशन ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। वर्ष 1990 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल कोपेनहेगन के सम्मलेन में महिला दिवस को इंटरनेशनल मानक दिया गया।

वर्तमान हालात –

गौरतलब है कि आजाद भारत में महिलाएँ दिन–प्रतिदिन अपनी लगन, मेहनत एवं सराहनीय कार्यों द्वारा राष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं। लंबे अरसे के अथक परिश्रम के बाद आज भारतीय महिलाएँ समूचे विश्व में अपने पदचिन्ह छोड़ रही हैं। मुझे कहने में कोई गुरेज नहीं है कि पुरुष प्रधान रूढ़िवादी समाज में महिलाएँ निश्चित रूप से आगामी स्वर्णिम भारत की नींव और मजबूत करने का हर संभव प्रयास कर रहीं हैं, जो सचमुच काबिले तारीफ है। भारतीय महिलाएँ विश्व में अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं फिर चाहे वो अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हो या नासा जैसी वैज्ञानिक संस्था हो। हाँ, यह जरूर है कि कुछ जगह अब भी महिलाएँ घर की चारदीवारी में कैद होकर रूढ़िवादी परंपराओं का बोझ ढो रही हैं। वजह भी साफ है, पुरूष प्रधान समाज का महज संकुचित मानसिकता में बँधे होना।
इन सबके बावजूद आज की महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए जागृत हैं व अपने हक के लिए आवाज उठाना जानती हैं। जिसमें पर्दा प्रथा, सती प्रथा, तीन तलाक बिल, हलाला इनकी बानगी है। आज की महिलाएँ डरती नहीं आगे बढ़ती हैं।

हाँ यह बात जरूर है कि उन्हें कुछ विषम परिस्थितियों का भी शिकार होना पड़ता है जिनमें कुछ भेड़िया प्रवृति के लोगो का दोष है जो इस मातृशक्ति को भोग और विलासिता का साधन समझते हैं। ऐसे तुच्छ विचारधारा के लोगों को जवाब देने का महिलाओं ने बीड़ा उठा रखा है जिसमें गुलाबी गैंग जैसे महिला समूह सक्रिय है।
लेकिन इन सबसे ज्यादा जरुरी पुरुषप्रधान समाज के दृष्टिकोण में बदलाव लाना पड़ेगा, उनके नजरिये को बदलना पड़ेगा, हमारे देश को विकासशील से विकसित होने के लिए हमारी बहन बेटियाँ महफूज रहना नितांत आवश्यक है।

महिलाओं के लिए समानता के अवसरः–

भारतीय संविधान महिलाओं को समान अधिकार देने की बात करता है।
जिसमें अनुच्छेद 14 महिलाओं को सामान अधिकार, अनुच्छेद 15(क) राज्यों द्वारा कोई भेद नहीं करने, अनुच्छेद 16 अवसर की समानता, अनुच्छेद 39(घ) समान कार्य के लिए समान वेतन, अनुच्छेद 42 काम की उचित व मानवीय परिस्थितियों व प्रसूति अवकाश के लिए अधिकार देता है। इन सभी अनुच्छेदों ने महिलाओं के विकास के लिए मील के पत्थर का काम किया है।

भारतीय महिलाओं की प्रेरणात्मक भूमिकाः—

भारतीय इतिहास को गौरवान्वित करने वाली कुछ महिलाओं की बात करते हैं। वैदिक काल से गार्गी, सिकता, घोषा, अपाला, कक्षावरि, लोपामुद्रा, मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने भारत को अपने आप पर गर्व करने के अवसर प्रदान किये हैं।

रानी पद्मिनी को भी भुला नहीं सकते जिसने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए 1600 रानियों के साथ में जौहर कर दिया था। मदर टेरेसा ने निःस्वार्थ सेवा के क्षेत्र में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। जीजाबाई ने विषम परिस्थियों में शिवाजी जैसा हीरा भारत को दिया। लक्ष्मी बाई की शहादत को कौन भूल सकता है। सावित्री बाई फुले ने पहली महिला शिक्षिका के रूप में नए आयाम स्थापित किये। पन्नाधाय व मारवाड़ की पन्ना गौर धाय ने बलिदान की परिभाषा सिखला दी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सानिया मिर्जा, मिताली राज, शैफाली वर्मा, सायना नेहवाल, कर्णम मल्लेश्वरी, मैरीकॉम, हिमा दास जैसी विभूतियों ने खेल के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

भारतीय राजनीति भी महिलाओं के स्वर्णिम कार्यों से अछूती नही है। इंदिरा गांधी, सुचेता कृपलानी, सरोजिनी नायडू (जिनके जन्मदिवस पर राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है), मीरा कुमार, प्रतिभा पाटिल जैसी महान महिलाओं ने भारतीय राजनीति को नए आयाम दिए। पूरे ब्रह्माण्ड में भारत को पहचान दिलाने में कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स जैसी महिलाओं ने खूब सार्थक प्रयास किये। इन सबके आलावा भी ऐसे अनेकों नाम जहन में हैं जिनको याद करने बैठें तो शब्द व कलम की स्याही कम पड़ जाए।

महिलाओं से सम्बंधित 10 रोचक जानकारियाँः—

1. सन् 1900 में महिलाओं को पहली बार ओलंपिक में भाग लेने की अनुमति दी गयी।
2. एक शोध के अनुसार महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा अधिक बुरे व भावनात्मक सपने आते हैं।
3. पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की जीभ अधिक स्वाद चख सकती है।
4. अमेरिका में 30% व्यवसाय महिलाओं के स्वामित्व में है।
5. ब्रिटेन के एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि महिलाएँ दिन में 9 बार अपने रूप के बारे में सोचती हैं।
6. पुरुषों को महिलाओं से दोगुना पसीना आता है।
7. पुरुषों की तुलना में महिलाएँ बहुत मल्टीटास्कर होती हैं।
8. महिलाएँ पुरुषों से दुगुनी बार पलक झपकाती हैं।
9. महिलाएँ जीवन का लगभग एक वर्ष यह तय करने में लगाती हैं कि उन्हें क्या पहनना है।
10. महिलाओं में सूँघने की क्षमता जन्म से पुरुषों से अधिक होती है।

गौरव सिंह घाणेराव
(अध्यापक, लेखक, कवि, विश्लेषक)
अध्यापक L–2(हिंदी),
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोरडू,
विकास खण्ड–सुमेरपुर,
जनपद–पाली, राजस्थान।

टी.एल.एम. का नाम– मधुमक्खी पालन

कक्षा – 4 व 5
विषय – हमारा परिवेश
सहायक सामग्री – रंगीन चार्ट पेपर, सफेद कागज, वाटर कलर, फेविकोल

उपयोगिता – बच्चों को जानकारी देना कि शहद कैसे बनता है? मधुमक्खी से प्राप्त शहद को हम भोजन पदार्थों के रूप में उपयोग लाते हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा बच्चों को इच्छित व्यवसाय में आगे बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

सुमन कुशवाहा,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भगवानपुर,
विकास खण्ड–नेवादा,
जनपद : कौशाम्बी।

हमारे जलीय जीवजन्तु और उनका परिवेश

शून्य निवेश द्वारा नवाचार यानी best of waste

विषय :– सामान्य ज्ञान एवम पर्यावरण

सामग्रीः– कागज का गत्ता, चार्ट पेपर, कागज का खाली डिब्बा, थर्मोकोल का डिब्बा, पेंसिल, रबर, स्केच कलर, कैंची, फेविकॉल

विधिः– चार्ट पेपर पर जलीय जीव ओर पेड़ पौधों के चित्र बनाकर कलर करके उसे अलग–अलग कैंची की सहायता से काट लेंगे। अब थर्मोकोल के डिब्बे में नीले कलर से सामने की दीवार को रंग करेंगे। अब उन सब बनाए हुए जीवजन्तु पेड़–पौधों को टूथपिक के सहारे थर्मोकोल के डिब्बे के अंदर फिक्स करके लगाएँगे। पूरे डिब्बे को एक प्लास्टिक पेपर से कवर करेंगे।

बच्चो को विभिन्न तरह के जलीय जीव जंतुओं के बारे में जानकारी मिलेगी कि वो कैसे दिखते हैं? कैसे जीव पानी मे रहते हैं अगर बच्चों ने नहीं देखे हैं ऐसे जीव तो उन्हें इस छोटे से मॉडल द्वारा ही हम विद्यालय में ही बच्चों को मनोरंजक तरीके से इसके बारे में बता सकते हैं कि जलीय जीव कैसे दिखते हैं? कहाँ रहते हैं, उन्हें ज्ञान हो जाएगा। खुद घर भी बनाने की प्रैक्टिस करते हैं जिससे चित्रकारी भी सीखते हैं बच्चे। बच्चों को मनोरंजक तरीके से पढ़ाने और स्कूल आने के लिए भी ऐसे **TLM** प्रेरित करते हैं।

माधुरी पौराणिक,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय हस्तिनापुर,
विकास खण्ड–बड़ागाँव,
जनपद–झाँसी।

INNOVATION-WASTE MANAGEMENT IN UPS MANKROL

Mankrol is a village in tehsil iglas in district Aligarh. There are primary and upper primary schools, which are Government schools. Most of the people of the village are raising their families by working as laborers most of the children in the village used to remain ill for the whole year. sometimes with measles ,sometimes with malaria and sometimes with viral fever was common.

People never even thought that the disease would be cured by medicine but it would be to stop the root cause of the disease. 4 years ago a ,when I, Suman Sharma would come to the upper primary school , saw that there was a mess in the school .There were no toilets in the school. Also, the children were not aware of cleanliness and their parents were also not worried about cleanliness . Most of the children were regularly on leaves . when I asked the reason, most of the children said that the reason was sickness .I decided to tackle this problem to remove obstacles in the way of imparting education among my students.

I made a health and hygiene monitor and encouraged the students in daily prayers and talked about to give hygiene a special place in their life. I told that half of the diseases can be eradicated only by adopting the basic Mantra of cleanliness. All the children obeyed and bathed everyday and started wearing clean uniform and all the children used to cut nails on every Sunday .All the children started eating food only after washing their hands with hand-wash which school provides .She build toilets for boys and girls with the help of village Pradhan and also guide students how to use it properly.

In the school, where there was a pile of garbage in the backyard of the school premises now school has beautiful kitchen garden .All of the children helped me in the preparation of kitchen and Hanging Garden. Students painted useless bottles beautifully and hung them on ropes

with flowering plants. Everyday, the waste that comes out of the school kitchen and classrooms put in a pit by all the students and cooks. when the pit was filled with garbage it was covered with thick layer of soil . After a few months when it would become a compost , it was used for plants . All the children used to do this work very delightedly and it was a matter of price of mango and kernels , I have eliminated the problem of garbage in the school as well as the school environment became clean and beautiful with plants . Every child of the school actively participates in the waste management activity and also look after kitchen garden. We have plant monitor and water monitor at our school.

The appreciable work of students of UPS mankrol under the guidance of me was published on Sunday special page of Hindustan Times newspaper dated 11 August 2019 .The work of students of UPS mankrol was also appreciated by present basic shiksha director Ms. Lalita Pradeep on Twitter .

We calls parents twicely a month and making them environmentally awared. I also started a campaign called A HOUSE, A TREE in which all the parents were asked to donate a plant to school . I also started HALF GLASS OF WATER campaign to save water and also shows videos based on social issues during discussions with parents in every meetings.

Parents of village mankrol now become very aware and that they keep their houses neat and clean as well as surroundings. Students also plant trees in the houses . Now, the regular attendance of the students of UPS mankrol is approximately 85% and 100 percent during examination .The Students of UPS mankrol are now stay healthy due to their clean habits. Regularly my students are nurturing their plants by watering them regularly.

Suman Sharma,
Head incharge,
PS and UPS Mankrol,
(English Medium)
Block Iglas,
District-Aligarh.

नवाचार

चित्रकला के माध्यम से गणितीय आकृतियों का ज्ञान व लेखन कौशल में सुधार

शिक्षण संवाद

परिचय– कला समेकित शिक्षा **Art Integrated Learning**

विभिन्न पाठ्यक्रम क्षेत्रों की विषय वस्तु के सीखने सिखाने के साथ कला को जोड़ देना ही कला समेकित शिक्षा है। कई बार कला बहुत सरलता से विषय की अवधारणा को स्पष्ट कर सकती है। इस प्रकार विषयों की अमूर्त अवधारणाओं को विभिन्न कला रूपों का उपयोग करके समझने में आसान और मूर्त रूप दिया जा सकता है। सीखने के इस तरीके से विषय के बारे में ज्ञान और समझ को बढ़ाने में मदद मिलती है। यदि हमारे विद्यालय में सीखने सिखाने की प्रक्रिया में कला समेकित शिक्षा का समावेश हो जाए तो यह न सिर्फ बच्चों के लिए रुचिकर होगा बल्कि शिक्षक, शिक्षिकाओं के लिए भी उनकी कक्षा बाल केंद्रित व आनंददायक बन जाएगी।

गणित और कला समेकित शिक्षा

विभिन्न वस्तुओं के बीच संबंधों को समझना गणित का एक प्रमुख उद्देश्य है। शुरूआती गणित में गिनती, माप और आकार प्रमुख है। कला शिक्षा बच्चों को आकारों को पहचानने, द्विआयामी या त्रिआयामी आकृतियां बनाने में मदद करती है। जिससे बच्चे लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई, क्षेत्रफल आदि का अनुभव प्राप्त करते हैं।

'नवाचार की आवश्यकता

"अधिकांश बच्चे गणित से डरते हैं और असफलता से भयभीत रहते हैं। अतः वे पहले ही हार मान लेते हैं और गणित सीखना छोड़ देते हैं।" बच्चों में गणितीय समझ के विकास की ओर ध्यान न देकर बहुत सारी अमूर्त अवधारणायें सिखायी जाती हैं। हमें गणित सीखने में बच्चों का इस तरह सहयोग करने की आवश्यकता है जिससे स्कूल के शुरूआती वर्षों में, खासतौर पर कक्षा 1 और कक्षा 2 में, गणित के लिए रूझान और गणित की समझ विकसित हो सके।

नवाचार के उद्देश्य

1– समझ के साथ पढ़ने लिखने के लिए बच्चों को अभिप्रेरित करना।

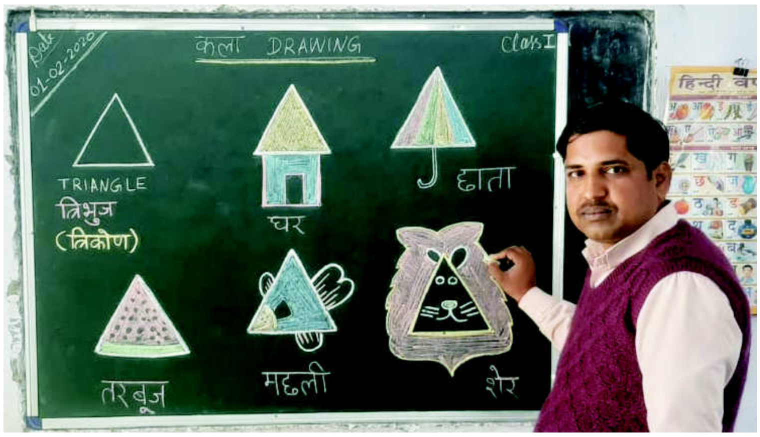

2– कक्षा के अनुरूप सीखने के स्तरों को प्राप्त कर सकना।

3– आकारों के विषय में बच्चों को तर्क समझने योग्य बनाना।

4– पढ़ने–लिखने को आनदंदायक और वास्तविक अनुभवों के साथ जोड़ना।

5– कक्षा और विद्यालय के वातावरण को सुगम बनाना।

कक्षा / विद्यालय में प्रयोग – इस नवाचार का प्रयोग प्राथमिक विद्यालय में किया जा सकता है।

योजना व क्रियान्वयन – कलात्मक, सृजनात्मक और कल्पनाशील होना हम सभी के लिए जरूरी है। कक्षा में प्रतिदिन या सप्ताह में कुछ पीरियड में चित्र बना कर छात्रों को समझा सकते हैं। प्रभाव क्षेत्र – कक्षा उपस्थिति में सुधार, सीखने का बेहतर वातावरण, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, मोटर कौशल का विकास।

नवाचार के लाभ –

1– वृत, त्रिकोण , चौकोर या वर्ग आदि ज्यामितीय आकृतियों का ज्ञान होता है।

2– छात्र रूचिपूर्वक सीखते हैं और गणित में रूचि लेते हैं।

3– छात्र स्वयं सक्रिय रहते हैं।

4– छात्रों की मोटर कौशल – हाथों और उंगलियों की समन्वय क्षमता का विकास होता है।

5– लिखने की शुरुआत में बच्चों से सीधी, आड़ी –तिरछी, खड़ी–पड़ी ,वक्राकार, जिगजैग आदि रेखाओं को बनवाया जाता हैं, जिससे बच्चे ऊब जाते हैं, जबकि इस नवाचार से बच्चों की रूचि बनी रहती है।

6–छात्र हिन्दी लिखते समय ड, इ, झ, ह, छ, च, य, ख, थ, म, भ आदि लिखने में गलती करते हैं, इस नवाचार से लेखन में सुधार होता है।

7– छात्रों में सृजनात्मक और कल्पनाशीलता का विकास होता है।

नवाचार प्रस्तुतकर्ता –
उमेश गिरि गोस्वामी
(सहायक अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय पिपरिया मंडन
विकास क्षेत्र बरखेड़ा, जिला पीलीभीत
यू डाइस कोड़ 09210207101
मोबाइल नम्बर 8279431770
ईमेल umeshgiribly@gmail.com

Bulletin board work : A board of craft and knowledge

Children telling news headlines, a new word, an idiom in morning assembly, this is a daily sighting in the campus of EMPS chakatali, sirkoni, jaunpur.The bulletin board work was started in July 2018 with the aim of diminishing the hesitation and bringing out the confidence and encourage the artistic side of kids. There are four houses in the school namely Ganga, Brahmaputra, Godavari and Narmada. Each house has a house teacher and alloted one week alternatively starting with Ganga house. Children under the guidance of their house teacher put different pictures, drawings, origami work, daily news headlines, one english word, and one idiom(for one week) on regular basis. In daily assembly three children from respective house tell news, word and idiom. The word and idiom is jotted down in copies by kids for revision.

Dr. Usha Singh,
Head Teacher,
English Medium Primary School
Chaktali, Block-Sirkoni,
District-Jaunpur.

माह मार्च 2020 की गतिविधि

सफल हो गयी अचानक बनी गतिविधि

शिक्षण संवाद

शायद सभी के साथ ऐसा होता होगा कि पढ़ाते–पढ़ाते स्वतः कुछ ऐसी गतिविधि बन जाती है, जो सफल सिद्ध होती है। आज कक्षा 1–2 के अपेक्षाकृत कमजोर छात्रों द्वारा वर्ण–पहचान के समय कुछ ऐसा ही हुआ और जब कमजोर बच्चे भी सक्रिय उत्साह दिखायें, स्वयं ध्यान देने लगें तो निश्चित ही बहुत हर्ष अनुभव होता है।

गतिविधि : कक्षा 1–2 के अपेक्षाकृत कमजोर विद्यार्थियों के समक्ष श्यामपट्ट पर सभी वर्ण अनियमित क्रम में (**randomly**) लिखे। फिर किसी एक बच्चे का परीक्षण शुरू किया। जिस वर्ण पर वह बच्चा अटका, वहाँ से दूसरे को मौका दिया, फिर जहाँ वह अटका, वहाँ से तीसरे को... बच्चे **repeat** भी हो सकते हैं लेकिन प्रथम बार हाथ उठाने वाले को वरीयता देते हुए। चूँकि घोषणा की गयी थी कि जो बच्चे सभी वर्ण पहचान लेंगे, उन्हें पुरस्कार मिलेगा (जो 3 बच्चों ने जीता भी), अतः बच्चे पूर्ण मनोयोग से श्यामपट्ट पर निगाह जमाये रहे।

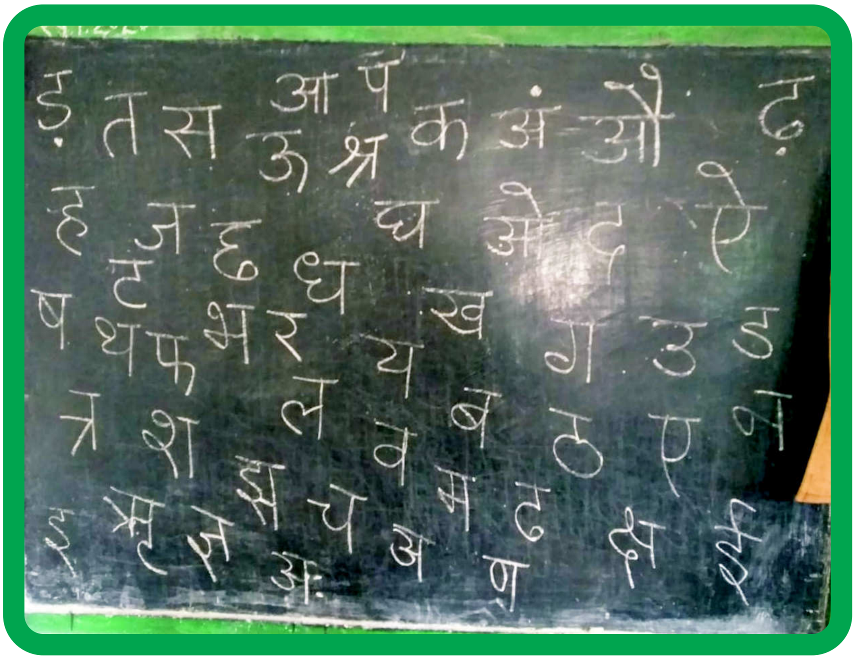

मूलतः यह योजना भले ही परीक्षण–प्रधान थी, लेकिन प्रतिस्पर्धा ने इसे अधिगम–प्रधान बना दिया क्योंकि एक बच्चे द्वारा पहचान करते समय शेष बच्चों का ध्यान भी उस ओर रहा।

योजना जारी रहेगी... अन्य ज्ञान–सामग्री में भी इसे आजमाने की कोशिश रहेगी।

प्रशान्त अग्रवाल,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
विकास क्षेत्र–फतेहगंज पश्चिमी,
जनपद–बरेली।

बाल कविता

बच्चे की अभिलाषा

अभी तो चलना सीखा
सीखा नहीं है बतियाना,
कुछ दिन करने दो नादानी
अभी नहीं मुझको पढ़ना।

हँसने दो खेलने दो
खुले आसमान में उड़ने दो,
मत करो बंद पिंजरे में
मेरे सुंदर से बचपन को।

कुछ दिन यूँ ही रहने दो
मिट्टी का रंग भी चढ़ने दो,
पानी में हो अपनी नाव
हवा में जहाज उड़ाने दो।

जहाँ मम्मी मुझे पढ़ाए
ना हो ट्यूशन जाना,
गर पापा मुझे डाँट लगाएँ
दादी करे कोई बहाना।

होमवर्क हो जहाँ थोड़ा सा
थोड़ी सी हो किताबें,
भारी बैग नहीं उठाना
ऐसा हो स्कूल अपना।

रंजना डुकलान,
सहायक अध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय धौडा,
विकास खण्ड-कल्जीखाल,
जनपद-पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

बाल कविता

प्रेरक प्रसंग

मैं अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ

शिक्षण संवाद

कल्पना चावला एक भारतीय अमरीकी अंतरिक्ष यात्री, अंतरिक्ष शटल मिशन विशेषज्ञ एवं अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं। वह कोलंबिया अंतरिक्ष यान आपदा में मारे गए 7 यात्री दल सदस्यों में से एक थीं।

सपनों की उड़ान–

कल्पना अपने पिता बनारसी लाल चावला, माता संज्योति तथा अपने चार भाई–बहनों के साथ रहती थी जिनमें वह सबसे छोटी थीं। घर में सब उन्हें प्यार से मोटू कहते थे। शुरुआती पढ़ाई करनाल के टैगोर बाल निकेतन में हुई। कल्पना के पिता उन्हें डॉक्टर या टीचर बनाना चाहते थे। लेकिन बचपन से ही कल्पना की दिलचस्पी अंतरिक्ष और खगोलीय परिवर्तन में थी। वह अक्सर अपने पिता से पूछा करती थीं कि यह अंतरिक्ष यान आकाश में कैसे उड़ते हैं??.. क्या मैं भी उड़ सकती हूँ??.. पिता उनकी इस बात को हँसकर टाल दिया करते थे। कल्पना अपने सपनों को साकार करने के लिए 1982 में अंतरिक्ष विज्ञान की पढ़ाई के लिए अमेरिका रवाना हुईं फिर साल 1988 में वह नासा अनुसंधान के साथ जुड़ीं जिसके बाद 1995 में नासा ने अंतरिक्ष यात्रा के लिए कल्पना चावला का चयन किया। उन्होंने अंतरिक्ष

की प्रथम उड़ान एस टी एस 87 कोलंबिया शटल से संपन्न की। अंतरिक्ष की पहली यात्रा के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में 372 घंटे बिताए और पृथ्वी की 252 परिक्रमाएँ पूरी कीं। इस सफल मिशन के बाद कल्पना ने अंतरिक्ष के लिए दूसरी उड़ान कोलंबिया शटल 2003 से भरी, कल्पना चावला की दूसरी और आखिरी उड़ान स्पेस शटल कोलंबिया से शुरू हुई। यह 16 दिन अंतरिक्ष मिशन था जो पूरी तरह से विज्ञान और अनुसंधान पर आधारित है।

फरवरी 2003 को धरती पर वापस आने के क्रम में यह यान पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही टूटकर बिखर गया। इस घटना कल्पना के साथ छह अंतरिक्ष यात्रियों की भी मौत हो गई। यह अंतरिक्ष यात्री तो सितारों की दुनिया में विलीन हो गए, लेकिन इनके अनुसंधान का लाभ पूरे विश्व को अवश्य मिलेगा। इस तरह कल्पना चावला के यह शब्द सत्य हो गए। ''मैं अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ। प्रत्येक पल अंतरिक्ष के लिए ही बिताया है और इसी के लिए ही मरूँगी।''

असफलता से नहीं घबराती थी कल्पना–

कल्पना में कभी आलस्य नहीं था, असफलता से घबराना उनके मन में नहीं था। वह जो ठान लेती उसे जरूर पूरा करती। आज कल्पना भले ही हमारे बीच नहीं हैं लेकिन वह हम सबके लिए एक मिसाल है। कल्पना चावला ने न सिर्फ अंतरिक्ष की दुनिया में उपलब्धि हासिल की बल्कि तमाम छात्र–छात्राओं को सपनों को जीना सिखाया। कोलंबिया स्पेस शटल के दुर्घटनाग्रस्त होने के साथ कल्पना की उड़ान रुक गई। लेकिन आज भी वह दुनिया के लिए एक मिसाल है उनके वह शब्द सत्य हो गए कि ''मैं अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ।'' अगर आप किसी कार्य को करने के लिए मन में ठान ले तो ईश्वर भी आपका साथ देता है!

''जहाँ चाह वहीं राह''

सोनम गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय शिवरामपुर,
विकास खण्ड–बेरुआरबारी,
जनपद–बलिया।

Kalpana Chawala

"PROUD OF NATION"

Kalpana Chawala is one of the inspiring personality and an Ideal for numerous people, it's been 18 years since her passing, but Indo-American astronaut, Kalpana Chawla continues to be an inspirational force for youth all-over, especially girls. "Nothing is impossible for women, if they have a strong will".

Solemnly Remembering the first women of Indian origin in space history Kalpana Chawla ,Born on July 1, 1961.Chawla who was the youngest of four children, went on to become the second Indian person to fly in space after astronaut Rakesh Sharma.

An idol for every Indian, especially girls,Kalpana, born in a conservative society, broke several traditions to become the first Indian-born Woman Astronaut in space. The first Indian woman and only the second Indian in history to fly in space.

Kalpana broke all kinds of barriers and inspired a whole new generation of young girls and women to look to the stars.

On her death anniversary, we remember the lessons taught by a woman who believed no challenge was too big, and who refused to let fear of the unknown stop her from succeeding.

No dream is too big

When in Karnal district in Haryana, Kalpana was interested in aeronautical engineering from an early age and did all she could to pursue her dreams, no mean feat in a society where engineers are overwhelming male.With an aim to join NASA, Chawla moved to the United States in 1982. She went on to obtain a Master's degree in Aerospace Engineering from the University of Texas at Arlington in 1984 and got her second Master's degree in 1986. Not stopping there, she went on to earn a doctorate in aerospace

engineering from the University of Colorado at Boulder. Moving to the US helped her earn a Master's and a Doctorate in her chosen field.

Kalpana worked at NASA for seven years before becoming an astronaut in March 1995. She took off on her maiden flight in November 1997.Fifteen years ago, on the morning of February 1, the world lost 7 shining stars, and India - its first Indian-born woman in space. The tragic loss of the space shuttle Columbia that killed seven astronauts, including Kalpana Chawla, resonated far and wide.

The space shuttle was on its way home, intending to land at Kennedy Space Centre, when it exploded on entering the Earth's atmosphere.17 years ago, the world watched in horror as the US space shuttle Columbia disintegrated while reentering the earth's atmosphere. All seven crew members on board were lost; one of them was Indian-American Kalpana Chawla, the first woman of Indian origin to go to space.

Although Kalpana's second space flight ended in disaster, she is remembered as an extraordinary woman, an inspiration, and a role model. She set a mighty example for being courageous, dedicated, and an independent woman who set her eyes on space and followed through with her dream.

Real" PROUD OF OUR NATION" and inspiration for all girls. We all salute KALPANA CHALA.

JAI HIND

Dr. SUMAN AGARWAL,
Head Master,
Shiva Primary Pathshala,
Nagar Kshetra,
District-Hapur.

बाल कविता

पत्तियों की करुण व्यथा

मैं तरसती हूँ आपके प्यार को,
आपके स्नेह और दुलार को। जो
फल आप खाते हैं उनके लिए भोजन मैं ही बनाती हूँ,
जो फल आपको भाते हैं उन्हें सुन्दर मैं ही बनाती हूँ।
फिर भी तरसती हूँ आपके प्यार को,
आपके स्नेह और दुलार को।
जिन लकड़ियों से आप घरों के दरवाजे, खिड़कियाँ और फर्नीचर बनाते हैं
उसके पीछे भी मैं ही हूँ।
फिर भी तरसती हूँ आपके प्यार को,
आपके स्नेह और दुलार को।
पर धरती का प्रदूषण नियन्त्रित मैं ही करती हूँ,
वर्षा का कारण भी मैं ही होती हूँ।
फिर भी तरसती हूँ आपके प्यार को, आपके स्नेह और दुलार को।
आपको जीवनदायिनी वायु मैं ही प्रदान करती हूँ,
आपके द्वारा उत्पन्न की वायु को मैं ही अवशोषित करती हूँ।
फिर भी तरसती हूँ आपके प्यार को,
आपके स्नेह और दुलार को।
आपको छाया मैं ही देती हूँ, गर्मी मैं ही कम करती हूँ।
धरती की हरियाली मुझसे ही है,
धरती की सुन्दरता मुझसे ही है।
फिर भी तरसती हूँ आपके प्यार को,
आपके स्नेह और दुलार को।

दयानंद मिश्रा,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिद्धी,
विकासखंड–पहाड़ी,
जनपद–मिर्जापुर।

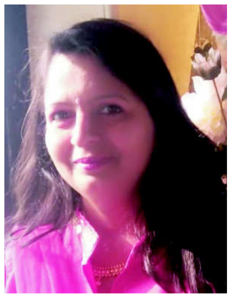

मतभेद

शिक्षण संवाद

एक बार कालू बन्दर और हरिया हाथी में बहुत झगड़ा हो गया। दोनों एक–दूसरे को मरने–मारने को तैयार हो गये। बीच–बचाव करने वाले जानवरों ने उस समय तो उनको लड़ने से करने से रोक दिया। कुछ देर बाद वे अपने–अपने घर के लिए रवाना हो गये। परन्तु दोनों के मन में उपजा हुआ रोष तो कोई बाहर नहीं निकाल सका। जिसका नतीजा यह हुआ कि कालू बन्दर और हरिया हाथी दोनों एक–दूसरे के जानी दुश्मन बन गये।

समय बीतता गया। दोनों इस मौके की तलाश में लगे रहते कि कैसे एक–दूसरे को नीचा दिखाया जाए? कालू बन्दर ने गुंडों को अपने पास बुलाया और बहुत सारे रुपए देकर हाथी को मारने के लिए सुपारी दे दी। इधर हाथी ने भी गुंडों को बुलाकर बन्दर को मारने के लिए पैसे दे दिए। उनकी घिनौनी साजिश की बात जंगल में आग की तरह फैल रही थी।

सारे जानवर आपस में खुसर–पुसर करने लगे। बात फैलते–फैलते जंगल के राजा शेर के पास पहुँच गयी। राजा बहुत न्यायप्रिय था। राजा को किसी की लड़ाई अच्छी नहीं लगती थी। वह बहुत शांत स्वभाव का राजा था। उसकी इसी आदत के कारण सारी जनता महाराज को पसंद करती थी। महाराज खुद भी अमन–चैन प्रिय थे और दूसरों को भी आपस में लड़ने नही देते थे। जब उन्हें पता चला कि हाथी और बन्दर में इतना बड़ा झगडा हो गया है तो उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्होंने अपने मंत्री भालू को बुलाया और कहा, ''कैसे भी करो पर इन दोनों का आपसी झगडा खत्म करो।'' भालू मंत्री बहुत समझदार था। उसे एक उपाय सूझा। उसने सोचा, सभी जानवरों की एक सभा बुलाई जाए। उन्हें कुछ ऐसी नैतिक बातें और नसीहतें समझाई जाएँ जिनसे उनके अन्दर रमा हुआ रोष खत्म हो सके। इस तरह के विचार को अमल में लाने ने लिए जल्दी ही भालू मंत्री ने पूरे जंगल में सभा बैठने का एलान करवा दिया।

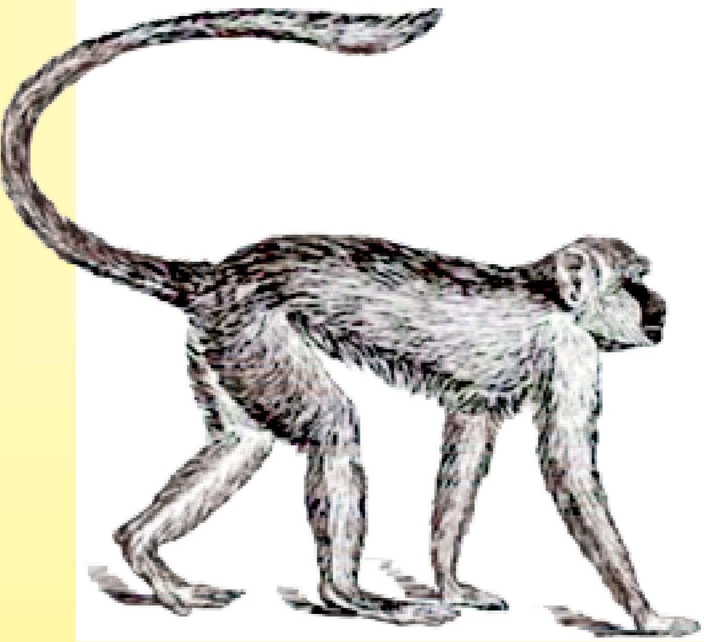

अगले दिन सभा में लगभग सभी जानवर एकत्र हो गये। हरिया हाथी एवं कालू बन्दर भी उपस्थित हुए। सभा का शुभारम्भ हुआ। भालू मंत्री ने मंच का संचालन किया और शेर को अध्यक्षता करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया।

महाराज ने सभी जानवरों को संबोधित करते हुए कहा, ''मेरे प्यारे प्रजाजनों, अगर हम

सभी अमन, प्यार, सद्भावना, धीरज और शांति को अपने जीवन में धारण कर लें तो हम सब के लिए बहुत सुख की बात होगी। हम सभी क्यों ऐसी छोटी—छोटी बातों में इतने उलझ जाते हैं कि अपने जीवन की शांति को अशांति में खुद बदल डालते हैं? क्या हम आपस में भाईचारा की भावना के साथ जिन्दगी नहीं जी सकते? हम अगर थोड़ी—सी सहनशीलता को अपना लें तो अपने मन में आये मनमुटाव को बड़ी आसानी से मिटा सकते हैं। लड़कर एक—दूसरे को पीड़ा देकर आखिर हम क्या हासिल करना चाहते हैं? क्या किसी के प्राण लेकर हम अपने को विजयी कहलाना ज्यादा पसंद करते हैं? क्या ऐसा करके हम महान बन सकते हैं?'' महाराज की ऐसी बात सुनकर सबको संतोष हुआ। महाराज के बाद अब मंत्री भालू ने कहा, ''हम सब एक मालिक के बन्दे हैं और अगर हम नेकी के रास्ते पर चलेंगे तो हम हँसते—हँसते इस दुनिया से जाएँगे तो भगवान भी हमारे जीवन से खुश होंगे। हमें एक—दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहिए और अगर कहीं नाराजगी भी है तो उसका समाधान करना चाहिए न कि एक—दूसरे के प्रति दुश्मनी पालनी चाहिए।''

महाराज और मंत्री के ऐसे दिल छूने वाले प्रवचनों से सभी जानवर बड़े खुश थे। भालू मंत्री ने बातों ही बातों में हरिया हाथी और कालू बन्दर को मंच पर बुलाया और उनके बीच संबंधों के बारे में असलियत सबको बताई। दोनों अपनी पोल खुलने पर लज्जित होकर पछता रहे थे कि कहाँ वे जानी दुश्मन बन बैठे थे पर महाराज ने उनको अपने मतभेद भुलाकर सुख—चैन से जंगल में जीने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महाराज व सभी जानवरों से अपने गलत आचरण के लिए माफी माँगी और कहा कि आप सबने हमारी समस्या को अपनी समस्या मानकर हमारी आँखें खोल दीं। हम वाकई में बहुत गलत थे। हम वायदा करते हैं कि अब हम भविष्य में कभी किसी से नही लड़ेंगे और अमन—चैन के साथ जीवन जिएँगे। महाराज के कहने पर दोनों ने अपने मतभेद भुलाकर एक—दूसरे को गले लगा लिया। सभी जानवरों ने महाराज का जय—जयकार किया और अपने—अपने घरों की तरफ चल दिए।

सच ही कहा गया है कि हमें अपने मतभेद भुलाकर सही जीवन जीना चाहिए।

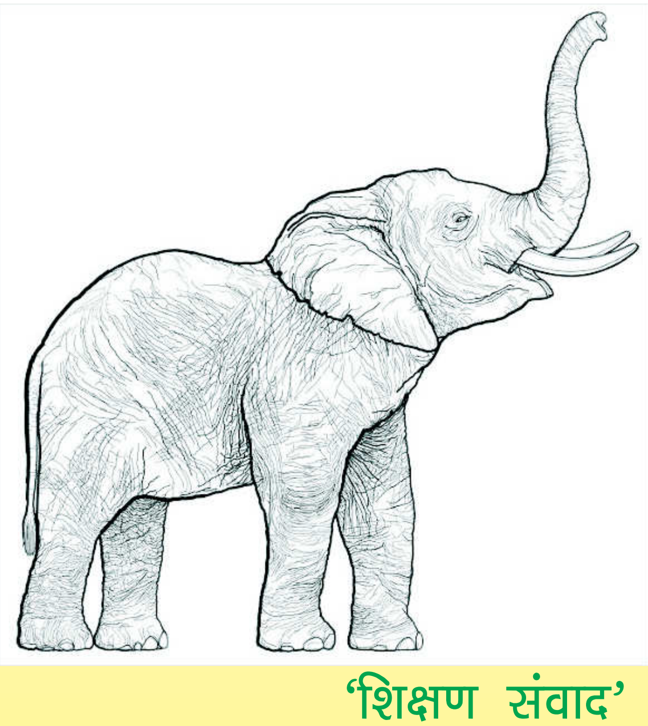

डॉ0 सीमा श्रोत्रिय,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय हरौला, नोएडा,
जनपद—गौतमबुद्ध नगर।

बाल फिल्म

बम बम बोले

शिक्षण संवाद

बम बम बोले मासूमियत से भरी एक उत्कृष्ट फिल्म है। इस फिल्म के माध्यम से दिखाया गया है कि गरीबी में जीने वाले बच्चे कैसे समय से पहले परिपक्व हो जाते हैं।

यह कहानी है पिनू और रिमझिम की जो अपने पिता खोगीराम और माँ के साथ एक गाँव में रहते हैं। खोगीराम की आर्थिक हालत बहुत खराब है और किसी तरह उनके घर का खर्चा चलता है। वह अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में डालता है ताकि वे डॉक्टर या इंजीनियर बन सके। रिमझिम के पास सैंडल की एकमात्र जोड़ी है, जिन्हें पिनू गुमा देता है। पिनू जानता है कि उसे डाँट पड़ेगी, लेकिन इससे भी ज्यादा उसे और उसकी बहन को इस बात की फिक्र है कि उनके पिता इस हालत में नहीं है कि नए जूते उन्हें दिला सके। रिमझिम सुबह स्कूल जाती है इसलिए पिनू उसे अपने जूते दे देता है। उसकी छुट्टी होने के बाद वह जूते पहनकर रोजाना दौड़कर अपने स्कूल जाता है। उसे देरी से पहुँचने पर डाँट भी पड़ती है। इसी बीच पिनू को पता चलता है कि इंटरस्कूल मैराथन होने वाली है, जिसमें एक इनाम एक जोड़ी जूते भी हैं। पिनू इसमें हिस्सा लेता है ताकि वह अपनी बहन के लिए जूते जीत सके।

भाई–बहन के प्रेम और गरीबी से जूझते हुए जीने की ये कहानी बच्चों में जिजीविषा उत्पन्न करती है। विद्यालय खुलने पर इस फिल्म को अपने विद्यालय में अवश्य दिखाएँ।

बाल कविता

बसंत ऋतु आए, सुवासित वातावरण लाए।
ऋतु शिरोमणि के रूप में, ऋतुराज कहलाएँ।।

शरद ऋतु की कंपन से, भीषण ठंड दूर करे।
सृष्टि में नवीनता से, ऋतु बसंत प्रतिनिधि हो।।

न विशेष गर्मी है, और न ही ठंड है बसंत।
बच्चे, बूढ़े, युवक – युवतियाँ, सभी के मन को आकृष्ट करे बसंत।

बसंत ऋतु आए, सुवासित वातावरण लाए
ऋतु शिरोमणि के रूप में, ऋतुराज कहलाएँ।

शरद ऋतु में झड़ गए पत्ते, नए पत्ते ऋतु बसंत लाए।
नए – नए रंग – बिरंगे से, पुष्पों को ऋतुराज खिलाएँ।।

ऋतुराज के स्वागत में, धरा खुशी से झूम उठे।
पेड़ – पौधे, फूल – पत्तियो से, उपवन खुशी से नाच उठे।।

बसंत ऋतु आए, सुवासित वातावरण लाए।
ऋतु शिरोमणि के रूप में, ऋतुराज कहलाएँ।।

ऋतुराज के आगमन से, सम्पूर्ण जनमानस सुमधुर हो।
सौंदर्य व रंग – रूप से, संपूर्ण धरा प्रफुल्लित हो।।

सभी का मन मोह लेती, प्यारी पंछी कोयल रानी।
चारों ओर मधुर कुक से, गूँज उठा बसंत राज।।

बसंत ऋतु आए, सुवासित वातावरण लाए।
ऋतु शिरोमणि के रूप में, ऋतुराज कहलाएँ।।

खेतों में चारों ओर, पीली सरसों फूल उठी।
प्रकृति ने पूरी धरा पर, पीली ओढ़नी पहना दी।।

नई स्फूर्ति, नई चेतना से, श्रेष्ठ हो ऋतु बसंत।
स्वास्थ्य की दृष्टि से, सर्वश्रेष्ठ है ऋतु बसंत।।

बसंत ऋतु आए, सुवासित वातावरण लाए।
ऋतु शिरोमणि के रूप में, ऋतुराज कहलाएँ।।

कवियों और साहित्यकारों ने, प्रशंसा में की अनेकों रचनाएँ।
उत्साहवर्धक, प्रेरणादायक से, अत्यंत रोचक है ऋतु बसंत।।

बसंत ऋतु आए, सुवासित वातावरण लाए।
ऋतु शिरोमणि के रूप में, ऋतुराज कहलाएँ।।

कुमार जितेन्द्र
(कवि, लेखक, विश्लेषक,
वरिष्ठ अध्यापक – गणित)
साईं निवास मोकलसर,
तहसील – सिवाना,
जिला – बाड़मेर, राजस्थान।
पिन कोड 344043
मोबाइल नं0– 9784853785,
मेल आईडी –
jitendra-jb-505@gmail-com

बाल कविता

अनुशासन, साहस और कर्तव्यनिष्ठा की कहानी

एक ड्राप आउट की पढ़ाई छोड़ने से विद्यालय नियमित आने की कहानी

मेरा विद्यालय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ढक्का हाजी नगर, ब्लॉक् – सैदनगर जिला – रामपुर अल्पसंख्यक बाहुल्य है जूनियर में पढ़ने वाले कुछ छात्र स्कूल टाइम के बाद काम सीखने के लिए जाते हैं। कक्षा 7 में पढ़ने वाले कुछ छात्र बढ़ई, दर्जी और बिजली का काम भी सीखते है। विद्यालय की कक्षा 7 का छात्र नूर गाँव के किसी बढ़ई के यहाँ काम सीख रहा था। एक दिन मई में उसने पूछा की सर मेरे साथ एक लड़का बढ़ई का काम सीख रहा है वो भी पढ़ना चाहता है। मैंने पूछा – ''वह किसी स्कूल में पढ़ता है। उसने कहा नहीं सर उसने बीच में पढ़ाई छोड़ दी। मैंने कहा ठीक है उसे हम कक्षा 6 में एडमिशन दे देंगे। लेकिन नूर अली ने कहा सर वो मेरे ही साथ कक्षा 7 में पढ़ना चाहता है। यह सुनकर में थोड़ा अचंभित हो गया। मैंने कहा कि कक्षा 7 में सीधे प्रवेश नहीं दे सकते और उसने बीच में भी पढ़ाई छोड़ दी है। लेकिन नूर अली ने कहा सर वो कक्षा 7 में ही प्रवेश लेना चाहता है मेरे साथ ही। दोनों दोस्तों की दोस्ती देखकर मैंने कहा ठीक है कल उसे ले के आना मैं उससे कुछ सवाल पूछुँगा। नूर अली अपने साथ अपने साथ आउट ऑफ स्कूल बच्चे को लाया जो उसके साथ बढ़ई का काम सीख रहा था। मैंने बच्चे से पूछा आपका क्या नाम है? उसने जवाब दिया शावेज। मैंने पूछा हिंदी में नकल कर सकते हो उसने कहा – ''हाँ।'' मैंने कहा अंग्रेजी में अपना नाम लिख सकते हो उसने हाँ में जवाब दिया। अब उसके टेस्ट का समय था। मैंने अंग्रेजी में उसका नाम, गणित में जोड़, घटा और गुणा के सवाल दिये। शावेज ने 90% सही किये थे। मैंने अपने प्रधानाध्यापक श्री सुरेंद्र सिंह रावत और साथी शिक्षक मुख्तार अहमद से बातचीत की। इस बच्चे को कक्षा 7 में प्रवेश दे देते हैं। प्रधानाध्यापक ने कहा कक्षा 6 में प्रवेश लेते हैं। कहीं कक्षा 7 के कोर्स को सही से न सीख पाये। लेकिन मैंने प्रधानाध्यापक से आग्रह किया कि हम इसे कक्षा 7 में प्रवेश दे देते हैं बच्चा मेहनती लग रहा है। शावेज को कक्षा 7 में प्रवेश दे दिया गया। मई से अगस्त तक वो एक औसत बच्चे की तरह की कार्य करता रहा। लेकिन सितम्बर से बच्चे ने जब विद्यालय नियमित आना शुरू किया। विद्यालय में उसने पढ़ाई में रुचि लेने शुरू किया। खेलों में भी बच्चे की रुचि बढ़ी। गणित, विज्ञान विषय में बच्चे की रुचि बढ़ने लगी। एक दिन मीना मंच में प्राथमिक चिकित्सा के विषय को पढ़ाते हुए मैंने जब

बच्चों को फर्स्ट एड बॉक्स बनाने के लिए प्रोजेक्ट दिया। नूर अली और शावेज ने लकड़ी का एक फर्स्ट एड बॉक्स बनाकर जब विद्यालय में लाये तो शावेज की सृजनात्मक का पता लगा। नवंबर तक शावेज कक्षा 7 के टॉप 3 बच्चों में अपना स्थान बनाने में सफल हो गया। कक्षा 6 से 8 तक के लिए विज्ञान विषय के लिए मैंने 200 प्रश्नों का एक प्रश्नों का संकलन किया हुआ है जो बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा के लिए भविष्य में और विज्ञान क्विज में सहायक होंगे। कक्षा 6 से 8 तक के सभी बच्चों को 200 प्रश्नों का सेट मैंने बिल्कुल मुफ्त दिया। ताकि सभी बच्चे एक समान रूप से ज्ञानार्जन कर सकें। मैंने 15 नवंबर से 6 से 8 तक के सभी बच्चों को प्रतिदिन 10 प्रश्न याद करने को दिए और अगले दिन मैं उसको सुनता था। दिसम्बर में मैंने 100 प्रश्नों में से 25 प्रश्नों का एक उत्तरीय टेस्ट सभी बच्चों को लिया। तो शावेज ने उस परीक्षा में 24 अंक लाकर संयुक्त रूप से दूसरा स्थान हासिल किया। विद्यालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर पहली बार जब स्टेज परफॉर्मेंस से सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गए तो शावेज ने ''जलवा तेरा जलवा गीत पर जहाँ मनमोहक नृत्य किया। ''तेरी मिट्टी में मिल जावां देशभक्ति गीत गाकर सभी को मोहित कर दिया। विद्यालय में बिना किसी अवकाश के नियमित आने वाले बच्चों का नाम सितारे जो बने ध्रुव तारे नवाचार की फ्लैक्स में लिखे जाते हैं। शावेज जनवरी माह में उस फ्लैक्स में अपना नाम लिखवाने के लिए तत्पर है और बिना किसी अवकाश के नियमित विद्यालय आ रहा है। विद्यालय समय के बाद वो अपना काम सीखने भी जाता है और विद्यालय में दिए कार्यों को समय से तन्मयता के साथ करके लाता है। शावेज ने जिला विज्ञान क्लब, रामपुर में कक्षा 7 के फेफड़ों के सक्रिय मॉडल के साथ विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और जनवरी माह में बिना किसी अवकाश के वह विद्यालय नियमित आया। जिसके लिए खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री प्रेम सिंह राणा द्वारा विद्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम उसको सम्मानित भी किया गया। शावेज को उज्ज्वल भविष्य के अग्रिम शुभकामनाएँ।

दीपक पुण्डीर
सहायक अध्यापक
पू0मा0वि0 ढक्काहाजी, सैदनगर
जनपद – रामपुर

भगत सिंह

सरदार भगत सिंह का नाम आते ही खून में गर्मी सी आ जाती है। उनका जोश, पराक्रम और मातृभूमि के प्रति प्यार जो हमेशा हम लाखों नौजवानों को देश और अपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्य पालन पूरी निष्ठा से करने की सीख देता है। क्रांतिकारी, देशभक्त सरदार भगत सिंह के शौर्य और पराक्रम का कोई जोड़ ना था। उनके कर्मों पर उनके विचारों की पूरी झलक थी। उनका कहना था–

मैं एक मानव हूँ और जो कुछ भी मानवता को प्रभावित करता है उससे मुझे मतलब है। निष्ठुर आलोचना और स्वतंत्र विचार ये क्रांतिकारी सोच के दो अहम् लक्षण हैं। व्यक्तियों को कुचलकर, वे विचारों को नहीं मार सकते। मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि मैं महत्त्वाकांक्षा, आशा और जीवन के प्रति आकर्षण से भरा हुआ हूँ, पर मैं जरुरत पड़ने पर ये सब त्याग सकता हूँ और वही सच्चा बलिदान है।

आमतौर पर लोग चीजें जैसी हैं उसके आदि हो जाते हैं और बदलाव के विचार से ही काँपने लगते हैं। हमें इसी निष्क्रियता की भावना को क्रांतिकारी भावना से बदलने की जरुरत है। इंसान तभी कुछ करता है जब वो अपने काम के औचित्य को लेकर सुनिश्चित होता है, जैसा कि हम विधान सभा में बम फेंकने को लेकर थे। जिन्दगी तो अपने दम पर ही जी जाती है। दूसरो के कन्धों पर तो सिर्फ जनाजे उठाये जाते हैं।

अहिंसा को आत्म–बल के सिद्धांत का समर्थन प्राप्त है। जिसमें अंततरू प्रतिद्वंदी पर जीत की आशा में कष्ट सहा जाता है, लेकिन तब क्या हो जब ये प्रयास अपना लक्ष्य प्राप्त करने में असफल हो जाएँ? तभी हमें आत्म–बल को शारीरिक बल से जोड़ने की जरुरत पड़ती

है ताकि हम अत्याचारी और क्रूर दुश्मन के रहमोकरम पर ना निर्भर करें।

क्रांति मानव जाति का एक अपरिहार्य अधिकार है। स्वतंत्रता सभी का एक कभी न ख़त्म होने वाला जन्म–सिद्ध अधिकार है, श्रम समाज का वास्तविक निर्वाहक है। राख का हर एक कण मेरी गर्मी से गतिमान है, मैं एक ऐसा पागल हूँ जो जेल में भी आजाद है।

यदि बहरों को सुनना है तो आवाज को बहुत जोरदार होना होगा। जब हमने बम गिराया तो हमारा ध्येय किसी को मारना नहीं था। हमने अंग्रेजी हुकूमत पर बम गिराया था। अंग्रेजों को भारत छोड़ना चाहिए और उसे आजाद करना चाहिए। जरूरी नहीं था कि क्रांति में अभिशप्त संघर्ष शामिल हो। यह बम और पिस्तौल का पंथ नहीं था। प्रेमी, पागल और कवि एक ही चीज से बने होते हैं।

किसी ने सच ही कहा है, सुधार बूढ़े आदमी नहीं कर सकते। वे तो बहुत ही बुद्धिमान और समझदार होते हैं। सुधार तो होते हैं युवकों के परिश्रम, साहस, बलिदान और निष्ठा से, जिनको भयभीत होना आता ही नहीं और जो विचार कम और अनुभव अधिक करते हैं। किसी को "क्रांति" शब्द की व्याख्या शाब्दिक अर्थ में नहीं करनी चाहिए। जो लोग इस शब्द का उपयोग या दुरूपयोग करते हैं, उनके फायदे के हिसाब से इसे अलग – अलग अर्थ और अभिप्राय दिए जाते हैं।

मेरा धर्म देश की सेवा करना है। जो व्यक्ति भी विकास के लिए खड़ा है उसे हर एक रूढ़िवादी चीज की आलोचना करनी होगी, उसमें अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी। जिंदा रहने की ख्वाहिश कुदरती तौर पर मुझमें भी होनी चाहिए। मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मेरा जिंदा रहना एक शर्त पर है। मैं कैद होकर या पाबंद होकर जिंदा रहना नहीं चाहता।

देशभक्तों को अक्सर लोग पागल कहते हैं। किसी भी इंसान को मारना आसान है, परन्तु उसके विचारों का नहीं। महान साम्राज्य टूट जाते हैं, तबाह हो जाते हैं, जबकि उनके विचार बच जाते हैं।

गौरव सचान,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय ताजपुर,
विकास खण्ड–सहावर,
जनपद–कासगंज।

जनपद स्तरीय शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला एवं शिक्षक सम्मान समारोह

शिक्षण संवाद

दिनांक 12/02/2020 दिन बुधवार को प्राथमिक विद्यालय लौधना विकास खण्ड–सरसवां जनपद कौशाम्बी में टीम मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी के सौजन्य से शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में माननीय जिलाधिकारी कौशाम्बी मनीष कुमार वर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कौशाम्बी श्री स्वराज भूषण त्रिपाठी एवं संयोजक के रूप में खण्ड शिक्षा अधिकारी सरसवां श्री मिथिलेश कुमार एवं विकास खण्ड मंझनपुर खण्ड शिक्षाधिकारी डॉ० अविनाश सिंह उपस्थित रहे। कार्यशाला में जनपद कौशाम्बी से आयोजक मण्डल द्वारा चयनित प्रतिभागियों ने प्रतिभाग करते हुए पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन दिया तत्पश्चात सभी 70 प्रतिभागियों को जिलाधिकारी महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यशाला में जनपद चित्रकूट से आए शिक्षक राजकुमार शर्मा जी का टी०एल०एम० स्टाल आकर्षण के केंद्र रहे। मुख्य अतिथि जिलाधिकारी महोदय जी ने सभी स्वप्रेरित प्रतिभागी अध्यापकों की प्रशंसा करते हुए मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी टीम के प्रयासों की भी सराहना की।

जिलाधिकारी महोदय जी द्वारा कार्यशाला आयोजक मण्डल टीम मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी के श्री पंकज सिंह (प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय लौधना, सरसवां, राज्य पुरस्कार प्राप्त श्री हरिओम सिंह (प्र० अ०) प्राथमिक विद्यालय पेरई, नेवादा, दीपनारायण मिश्र (स०अ०) प्राथमिक विद्यालय रामपुर धमावां, सिराथू को सकुशल शुचिता पूर्ण कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में सराहनीय योगदान हेतु प्रोत्साहित करते हुए सम्मानित किया गया।

सभार:–
टीम मिशन शिक्षण संवाद, कौशाम्बी।

YouTube: https://youtu.be/I7p4hhi7Iuk
Facebook : https://www.facebook.com/1598220847122173/posts/2577338552543726/

शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला अलीगढ़

शिक्षण संवाद

अलीगढ़ रोड स्थित एक गेस्ट हाउस में मिशन शिक्षण संवाद कार्यशाला का आयोजन शिक्षकों द्वारा किया गया। कार्यशाला के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षक—शिक्षिकाओं को सम्मानित भी किया गया।

शैक्षिक उन्नयन हेतु आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ एडी बेसिक डॉ. आईपीएस सोलंकी ने दीप प्रज्ज्वलन व माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करके किया। उन्होंने गतिविधि पर आधारित शिक्षा प्रदान करने की बात कही। बीएसए डॉ. लक्ष्मीकांत पांडे ने कहा कि शिक्षक समाज को दिशा देने का काम करता है और इस जिम्मेदारी का निर्वहन फख्र के साथ करना चाहिए। शिक्षकों को मौजूदा दौर में तकनीकियों का प्रयोग करके शिक्षण को प्रभावी बनाना चाहिए। प्रमुख प्रस्तुतियों में, राज्य शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक, यतीश कुमार द्वारा ''बीजगणित की अवधारणा'' पर अपनी प्रस्तुति दी गई। उत्तर प्रदेश राज्य संदर्भ समूह के सदस्य संजीव शर्मा द्वारा ''ई आर ए सी आधारित शैक्षणिक गतिविधियों एवं शिक्षण प्लान'' के बारे में विस्तार से बताते हुए लर्निंग आउटकम्स व फोकल लर्निंग आउटकम के विषय में बताया। सुरेंद्र शर्मा द्वारा कहानी को लेकर प्रस्तुति दी गई। वर्षा श्रीवास्तव ने शिक्षण में आईसीटी का प्रयोग, हेमलता गुप्ता ने कॉमिक्स के द्वारा शिक्षण, पूनम गुप्ता ने कविता द्वारा शिक्षण शालिनी सोलंकी द्वारा पाठ योजना पर प्रस्तुति उत्तर प्रदेश राज्य संदर्भ समूह की सदस्य अनुज कुमारी द्वारा , ''क्यूआर कोड के माध्यम से दीक्षा एप का प्रयोग'' अनिल कुमार द्वारा ''बच्चों के साथ गतिविधियाँ कैसे करें'' राजेंद्र सिंह द्वारा संस्कृत की प्रस्तुतियाँ सुमन शर्मा द्वारा मीना मंच एवं जल बचाओ पर

अपनी प्रस्तुति दी गईं। अन्य प्रस्तुतियाँ देने वालों में प्रमुख रूप से विजेंद्र राणा कंचन गर्ग डॉ ललित कुमार नरेंद्र सेंगर, उत्तरा आदि शामिल रहे।

कार्यशाला में विभिन्न स्टाल के माध्यम से यह प्रदर्शन भी किया गया कि विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम किस प्रकार सफलतापूर्वक संचालित किए जा सकते हैं उदाहरण के रूप में विज्ञान लैब यतीश गुप्ता, वर्षा श्रीवास्तव व शीलरत्न कुमार, गणित लैब सुरेन्द्र शर्मा व अशोक कुमार, मीना मंच कविता गुप्ता व सुमन शर्मा, आओ अंग्रेजी सीखें, प्रतिभा भारद्वाज, संस्कृत प्रदर्शनी राजेंद्र सिंह, सामुदायिक सहभागिता एवं खेलकूद को स्टाल के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

कार्यक्रम को मिशन शिक्षण संवाद के संयोजक यतेन्द्र सिंघल, खंड शिक्षाधिकारी अखिलेश प्रताप सिंह, राज्य पुरस्कार प्राप्त यतीश कुमार गुप्ता, वर्षा श्रीवास्तव, शालिनी सोलंकी, ललित गुप्ता, हेमलता गुप्ता, सुरेन्द्र शर्मा, अनुज कुमारी, अनिल राघन, राफिया निकहात, कंचन गर्ग, विजेन्द्र राना व सुमन शर्मा ने अपने उत्कृष्ट कार्यों पर प्रकाश डाला। जनपद के 104 शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। आयोजन में मिशन शिक्षण संवाद के पूरन चंद्र शर्मा, अशोक कुमार सिंह, राजकुमार शर्मा, दानवीर सिंह, कृष्णकांत उपाध्याय, अशोक कुमार, दुष्यंत कुमार, कविता गुप्ता व शिल्पी शर्मा का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री संजीव शर्मा जी व श्रीमती उत्तरा मैम ने किया।

साभारः–
यतेंद्र सिंघल, अलीगढ़
संकलनः– टीम मिशन शिक्षण संवाद

https://www.facebook.com/1598220847122173/posts/2544196272524621/

मुझे अध्यापक रहने दो

मैं अध्यापक हूँ, मुझे अध्यापक रहने दो।
आज न रोको न टोको खुलकर कहने दो।
बच्चों के लिए शिकायत पेटिका रख दो।
अध्यापक की भी सुन लो उसको भी कुछ कहने का हक दो।
बच्चों पर अध्यापक का थोड़ा हक रहने दो।
वह डाँटे दुलारे अपने बच्चे सा पुचकारे यह अधिकार रहने दो।
मैं अध्यापक हूँ, मुझे अध्यापक रहने दो।
अनेक सूचना की डिमांड करते हो
मोबाइल चलाना नहीं यह आदेश करते हो।
हर सूचना की व्हाट्सएप्प पर माँग करते हो।
प्रथम, दीक्षा, प्रेरणा की शुरुआत करते हो।
नित्य नए अभियान चलाते हो।
अध्यापक को यहाँ–वहाँ नचवाते हो।
अध्यापक पढ़ाते नहीं यह इल्जाम देते हो।
अरे पढ़ाने का थोड़ा सा तो समय रहने दो।
मैं अध्यापक हूँ मूझे अध्यापक रहने दो।
मेरे सर्वस्व की पहचान रहने दो।

रचयिता–स्वाती सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय रवांसी,
विकास खण्ड–परसेंडी,
जनपद–सीतापुर।

हास्य योग से कई रोगों का इलाज

शिक्षण संवाद

शिल्पी गोयल

बिना किसी कारण लंबे समय तक हँसने की क्रिया को हास्य योग कहते हैं। हास्य योग से भी वही सारे लाभ मिलते हैं जो अनायास मिलकर हँसने से या चुटकले सुनने आदि से मिलते हैं।

हँसी और योग की जुगलबंदी

सुबह अगर आप अपने आसपास पार्क में देखें तो बहुत सारे लोग एक साथ खड़े या बैठे नजर आएँगे और बिना कारण ठहाके लगाते हुए दिखेंगे।यह तनाव भगाने का एक सबसे अच्छा तरीका है जिसे ''लाफ्टर थैरेपी'' भी कहते हैं। जब हँसी के साथ योग मिल जाए तो ये बन जाता है ''लाफ्टर योग''। लाफ्टर योग सेहत के लिए बहुत लाभकारी होता है।

लाफ्टर योग और इसके लाभ

हँसी और योग को मिलाकर हास्य योग बनता है, जिसमें प्राणायाम के साथ हँसी की अलग–अलग कसरत करना सिखाया जाता है। हास्य योग के तहत जोर–जोर से ठहाके मारकर, बिना वजह बेबाक हँसने का अभ्यास किया जाता है। 1995 में डॉक्टर मदन कटारिया ने शुरू किया और अपनी रिसर्च में पाया कि ठहाके लगाने से हँसना शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बेहतरी में मददगार है।

अच्छा मूड : चाहे आपका निजी जीवन हो व्यावसायिक जीवन या

सामाजिक जीवन आप जो कुछ करते हैं। उसमें अहम भूमिका निभाता है आपका मूड। अगर मूड अच्छा है तो आप बेहतर तरीके से अपना काम करेंगे। लाफ्टर योग आपकी मस्तिष्क कोशिकाओं में एंड्रोफिन नामक रसायन उत्पन्न करके कुछ ही मिनटों में आपके मूड को बेहतर बना देता है।

स्वास्थ्य लाभ: लाफ्टर योग इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है जिससे आपको उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह, डिप्रेशन, अर्थराइटिस, एलर्जी, ब्रोंकाइटिस, कमर दर्द, माइग्रेन सिरदर्द, अस्थमा संबंधी बीमारियों तथा कैंसर जैसी कई गंभीर बीमारियों से बचाने में मदद करता है।

हँसी के फायदे :

मनोवैज्ञानिक के अनुसार जब कोई हँसता है तो मस्तिष्क के न्यूरो केमिकल्स सक्रिय होकर शरीर को बेहतर अहसास कराते हैं। मस्तिष्क का पूरा तंत्रिका तंत्र अनेक रसायन मुक्त करता है जो व्यक्ति के मिजाज, व्यवहार और शरीर को प्रभावित करते हैं। ऐसे में हँसी सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

लाफ्टर थेरेपी व लाफ्टर योग में फ़र्क: लाफ्टर थेरेपी के अंतर्गत लगभग 2 मिनट तक हँसने की क्रिया में लिप्त रहा जाता है जबकि लाफ्टर योग थेरेपी नियमित अंतराल पर सामान्य श्वांस व्यायाम, श्वांस विश्राम व उत्तेजित हँसी का मिला–जुला रूप होता है। यह थेरेपी रक्तचाप व तनाव को कम कर सकती है और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाती है।

हास्य योग कैसे करें: इसमें शरीर के आंतरिक हास्य को बाहर निकालना सिखाया जाता है, जिससे शरीर सेहतमंद होता है। शुरूआत में नकली हँसी के साथ शुरू होने वाली क्रिया धीरे–धीरे हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है और हम बिना किसी कोशिश के हँसने लगते हैं।

रिसर्च का अनुमान: अमेरिका में फिजियोलजिस्ट और लाफ्टर रिसर्चर "विलियम फ्राई" बताते हैं कि जोरदार हँसी दूसरे इमोशंस के मुकाबले ज्यादा बेहतर फिजिकल एक्सरसाइज साबित होती है। इससे मसल्स एक्टिवेट होते हैं, हार्ट बीट बढ़ती है और ज्यादा ऑक्सीजन मिलने से रेस्पिरेटरी सिस्टम बेहतर बनता है। लाफ्टर योग थेरेपी से लंबी बीमारी के मरीजों को काफी फायदा होता है। इसलिए अमेरिका, यूरोप और खुद हमारे देश में भी अस्पतालों से लेकर जेल में भी लाफ्टर थेरेपी या हास्य योग कराया जाता है। रोज हास्य योग को करने से हम स्वस्थ रहते हैं इसलिए हमे अपने दैनिक जीवन में इसको अपनाना चाहिए।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड – सिकंदराबाद,
जनपद – बुलंदशहर।

खेल-विशेष

''लूडो''

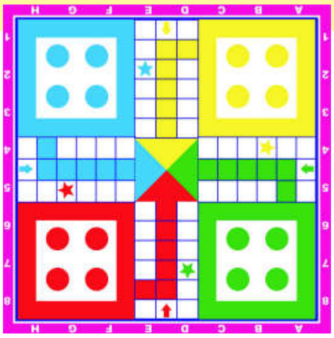

शिक्षण संवाद

''लूडो'' नाम लेते ही हमें एक बोर्ड याद आता है, जिसके चारों कोनों पर चार रंग (लाल, पीला, हरा, नीला) के खाने बने होते हैं। इन पर खिलाड़ी अपनी–अपनी गोटियाँ रखते हैं। ये लूडो कार्ड दफ्ती, प्लास्टिक, लकड़ी, कार्डबोर्ड किसी का भी हो सकता है। लूडो बच्चे–बड़ों, लड़के–लड़कियों सभी की पसंद होता है। अगर मौसम खराब है, हम बाहर खेलने नहीं जा सकते या बहुत धूप है तो भी हम लूडो आराम से घर या स्कूल के किसी भी कोने में बैठकर खेल सकते हैं।

लूडो खेलने के लिए केवल लूडो कार्ड, गोटियाँ, पासे की आवश्यकता होती है। इस खेल में गोटियाँ चार रंग की होती हैं। प्रत्येक खिलाड़ी चार गोटियों से खेलता है, इस प्रकार कुल 16 गोटियाँ होती हैं। गोटियों के साथ एक पासा भी होता है। पासा घनाकार होता है। इसमें 6 पृष्ठ होते हैं। पासे की सहायता से ही यह खेल आगे बढ़ता है। पासे में 1, 2, 3, 4, 5, 6 बिन्दु बने होते हैं। पासा उछालकर डालने पर जितने बिन्दु ऊपर आते हैं, उतने ही खाने गिनकर गोटी को आगे बढ़ाया जाता है। बोर्ड में जगह–जगह पर स्टॉप बने होते हैं। यदि कोई खिलाड़ी उस स्थान पर अपनी गोटी ले आता है तो दूसरे खिलाड़ी उसे पीट नहीं सकते।

लूडो खेलने का तरीका–

लूडो में प्रायः चार खिलाड़ी खेल सकते हैं। चारों खिलाड़ी अलग–अलग भी खेल सकते हैं या दो–दो खिलाड़ियों के जोड़े बनाकर भी। दोनों की विधियाँ थोड़े से अन्तर के साथ लगभग एक जैसी होती हैं–

जब चारों खिलाड़ी अलग–अलग खेलते हैं तब जिसके पासे में 6 बिन्दु पहले आता है, वह सबसे पहले चलता है। गोटियाँ घड़ी की सुई की दिशा में चलाई जाती हैं। यदि किसी खिलाड़ी की चाल में 6 तीन बार आता है तो वह एक भी चाल नहीं चल सकता। कोई भी खिलाड़ी अपनी गोटी को विजय द्वार वाले रास्ते पर तब तक नहीं चला सकता जब तक किसी अन्य खिलाड़ी की कम

से कम एक गोटी को न पीट दे।

जोड़े बनाकर खेलने पर–

जिन खिलाड़ियों का जोड़ा बनता है वे आपस में एक–दूसरे की गोटी नहीं पीट सकते बल्कि दोनों मिलकर विरोधियों की गोटी पीट सकते हैं। एक खिलाड़ी अपनी चाल के आधार पर अपने साथी की गोटी चल सकता है। खिलाड़ी चाहे तो विपक्षी जोड़े से बचने के लिए अपने साथी की गोटी पर गोटी रखकर उसे डबल कर सकता है। यदि गोटी डबल कर ली जाए तो उसे स्टॉप पर लाकर ही अलग–अलग किया जा सकता है।

जोड़े में खेलने पर जब दोनों खिलाड़ियों की गोटियाँ विजय द्वार पर पहुँच जाती हैं तभी जीत मानी जाती है। एक खिलाड़ी की भी गोटी बाहर रहने पर दोनों की हार मानी जाती है।

लूडो खेल के नियम–

खिलाड़ी 6 आने पर ही अपनी गोटी खोल सकता है। यदि पासे में 6 आता है तो खिलाड़ी को एक अतिरिक्त चाल मिल जाती है। यदि गोटियों को डबल कर लिया गया है तो उसे 2, 4, 6 आने पर ही चलाया जा सकता है। पासे में लगातार 6 आने पर खिलाड़ी की चाल समाप्त हो जाती है।

लूडो खेल से लाभ–

लूडो खेल एक ''इन्डोर गेम'' है इसे आसानी से बच्चे कहीं भी बैठकर शान्ति से खेल सकते हैं। इसमें किसी भी प्रकार की चोट लगने का कोई खतरा नहीं होता है। इस खेल से मस्तिष्क का अभ्यास होता है, एकाग्रता बढ़ती है। इस खेल से त्वरित निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। जोड़े बनाकर खेलने से टीम भावना का विकास होता है। आत्मनिर्भर होकर खेलने से आत्मविश्वास बढ़ता है। इस खेल से बच्चे आसानी से रंगों की पहचान करना सीखते हैं। इस खेल में पासे और बोर्ड पर गोटी चलाने से बच्चों को संख्या का ज्ञान होता है, बच्चे जोड़ना व घटाना भी सीखते हैं। इस खेल से विभिन्न प्रकार के आकारों का भी ज्ञान बच्चों को होता है। एक बहुत ही आसान किन्तु बहुत ही लाभप्रद खेल।

डॉ0 रचना सिंह, प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय कटरी पीपरखेड़ा,
विकास खण्ड–सिकन्दरपुर कर्ण,
जनपद–उन्नाव।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद